वैदिक सत्संग पद्धति

आचार्य हरिदेव आर्य

ओ३म्

वैदिक सत्संग पद्धति

(दैनिक संन्ध्या-हवन की बृहद् एवं अत्युत्तम पुस्तक)

सम्पादक :–
आचार्य श्री पं. हरिदेव आर्य
एम. ए., विद्यावाचस्पति

प्रकाशकः–

मधुर–प्रकाशन

2804, गली आर्य समाज, बाजार सीताराम, दिल्ली-110 006

प्रकाशक :

राजपाल सिंह शास्त्री

अध्यक्ष, मधुर प्रकाशन,

2804, गली आर्य समाज, बाजार सीताराम, दिल्ली-110 006

फोन : 3238631, 7513206

संशोधित एवं परिवर्द्धित   संस्करण : मई 1999

मूल्य   10.00 प्रति

मुद्रक : तिलक प्रिंटिंग प्रेस, 2046, सीताराम बाजार, दिल्ली-110006. फोन न. 323 1369

वैदिक सत्संग पद्धति की आवश्यकता

अनेक वर्षों से यह अनुभव किया जा रहा था और अनेक सत्संगप्रेमियों की भी बार-बार की मांग और आवश्यकता भी थी कि एक ऐसी सत्संग पद्धति का सरल एवं प्रेरक (प्रभावी) संस्करण तैयार किया जाय जो जन-साधारण के लिए भी विशेष उपयोगी सिद्ध हो।

अतः इसी दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत वैदिक सत्संग पद्धति का नवीनत्तम, सरल एवं दशम संस्करण के रूप आपके हाथों में प्रस्तुत है।

अपनी विशेषताओं के कारण **वैदिक सत्संग पद्धति** जनप्रिय एवं लोकप्रिय बन पाई है।

विशेषताएं–

- प्रातः काल की यज्ञ विधि, सायं काल की यज्ञ विधि, प्रातः तथा सायं की यज्ञ विधि तथा विशेष अवसरों पर विशेष एवं बृहद् यज्ञ विधि सब पृथक्-पृथक् हैं। अर्थात् बारम्बार पृष्ठ बदलने का झंझट नहीं।
- ईश भक्ति रस से सने पुराने भजनों को विशेकर सम्मिलित करके विशेष उपयोगी बनाया है।
- प्रातः काल के मंत्र, यज्ञोपवीत, पूर्णमासी, अमावस्या आदि पाक्षिक यज्ञों के पूरे मंत्र दिये गए हैं।
- बड़े मोटे अक्षर में सब मंत्र छापे गए हैं।
- कागज बढ़िया, कम्प्यूटर द्वारा छपाई तथा शुद्धता की ओर विशेष ध्यान रखा गया है।
- मूल्य भी लागत मात्र, प्रचार हेतु कम से कम रखा गया है।

–हरिदेव आर्य

कहां, क्या-पढ़ने को मिलेगा–

विषय		पृष्ठ

प्रातः काल के मन्त्र

ब्राह्ममुहूर्त में उठकर अपनी शैय्या पर बैठे-बैठे परमदेव परमात्मा को साक्षी करके, अर्थ विचार के साथ प्रातःकाल के मन्त्रों का उच्चारण बड़ी श्रद्धा एवं आनन्द के साथ करें :–

ओ३म् प्रातरग्निं प्रातरिन्द्रं हवामहे, प्रातर्मित्रा वरुणा प्रातरश्विना। प्रातर्भगं पूषणं ब्रह्मणस्पतिं, प्रातस्सोममुत रुद्रं हुवेम ।१ ऋ० ७/४१/१

ओ३म् प्रातर्जितं भगमुग्रं हुवेम, वयं पुत्रमदितेर्यो विधर्त्ता। आध्रचिद्यं मन्यमानस्तुरश्चिद् राजाचिद्यं भगं भक्षीत्याह !२ ऋ० ७/४१/२

ओ३म् भग प्रणेतर्भग सत्यराधो, भगेमां धियमुदवा ददन्नः । भग प्रणो जनय गोभिरश्वैर्भग प्र नृभिर्नृवन्तः स्याम ।३ ऋ० ७/४१/३

ओ३म् उतेदानीं भगवन्तः स्यामोत, प्रपित्व उतमध्ये अह्नाम् उतोदिता मघवन्त्सूर्यस्य, वयं देवानां सुमतौ स्याम ।४ ऋ० ७/४१/४

ओ३म् भग एव भगवां अस्तु देवास्तेन वयं भगवन्तः स्याम। तं त्वा भग सर्व इज्जोहवीति स नो भग पुर एता भवेह ।५ ऋ० ७/४१/५

ओ३म्

ब्रह्म यज्ञ (वैदिक सन्ध्योपासना)

सन्ध्या

जिसके द्वारा परमेश्वर का भली भांति ध्यान किया जाय, वह 'सन्ध्या' है। रात और दिन के संयोग समय दोनों सन्ध्याओं में सब मनुष्यों को परमेश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना करनी चाहिए।

पहले जलादि से बाह्य शरीर की शुद्धि और राग-द्वेष आदि के त्याग से भीतर की शुद्धि करनी चाहिए ...... परन्तु शरीर शुद्धि की अपेक्षा अन्तःकरण की शुद्धि सबको अवश्य करनी चाहिए क्योंकि वही सर्वोत्तम और परमेश्वर प्राप्ति का एक साधन है। (पञ्चमहायज्ञ॰)

कम से कम तीन प्राणायाम करें अर्थात् भीतर की वायु को बल से निकाल कर यथाशक्ति बाहर ही रोक दें, फिर शनैः-शनैः ग्रहण करके कुछ चिर भीतर ही रोक के बाहर निकाल दें और वहां भी कुछ रोकें और मन में ओ३म् का जाप करते जाएं, इस प्रकार कम से कम तीन बार करें। इससे आत्मा और मन की स्थिति सम्पादन करें। इसके अनन्तर गायत्री मन्त्र से शिखा को बांध के रक्षा करें, इसका प्रयोजन यह है कि इधर-उधर केश न गिरें, सो यदि केशादि का पतन न हो तो न करें और रक्षा करने का प्रयोजन यह है कि परमेश्वर प्रार्थित होकर सब भले कामों में सदा सब जगह से हमारी रक्षा करें। (पञ्चमहायज्ञविधि)।

गायत्री मन्त्र

ओ३म् भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात् ॥

आचमन मन्त्र

निम्नलिखित मन्त्र से परमेश्वर की प्रार्थना करके तीन बार आचमन करें—

ओ३म् शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये।
शंयोरभि स्रवन्तु नः ॥ यजु॰ ३६/१२

इन्द्रिय स्पर्श मन्त्र

बांएं हाथ में थोड़ा जल लेकर दांएं हाथ की मध्यमा और अनामिका से निम्नलिखित मन्त्रों से अंग स्पर्श करें। प्रत्येक अंग की जांच-पड़ताल करना और ईश्वर से सभी इन्द्रियों के बल और यश की कामना करना प्रयोजन है।

ओ३म् वाक् वाक् (इससे मुख का दांयां और बांयां भाग)

ओ३म् प्राणः प्राणः (इससे नासिका का दांयां और बांयां छिद्र)

ओ३म् चक्षुः चक्षुः (इससे दांयां और बांयां नेत्र)

ओ३म् श्रोत्रम् श्रोत्रम् (इससे दांयां और बांयां कान)

ओ३म् नाभिः (इससे नाभि)

ओ३म् हृदयम् (इससे हृदय)

ओ३म् कण्ठः (इससे कण्ठ)

ओ३म् शिरः (इससे मस्तक)

ओ३म् बाहुभ्यां यशोबलम्

(इससे दांई और बांई भुजा के मूल स्कन्ध)

ओ३म् करतलकर पृष्ठे

(इससे दांयें और बांयें हाथ के ऊपर और तले)

मार्जन मन्त्र

तत्पश्चात् निम्नलिखित मन्त्रों से बांयें हाथ में जल लेकर दांयें हाथ की मध्यमा और अनामिका अंगुलियों के अग्रभाग से नेत्रादि अंगों पर ईश्वर के नामों के अर्थों का स्मरण करें, जल छिड़क कर मार्जन करें:–

ओ३म् भूः पुनातु शिरसि (इससे शिर)

ओ३म् भुवः पुनातु नेत्रयोः (इससे दोनों नेत्र)

ओ३म् स्वः पुनातु कण्ठे (इससे कण्ठ)

ओ३म् महः पुनातु हृदये (इससे हृदय)

ओ३म् जनः पुनातु नाभ्याम् (इससे नाभि)

ओ३म् तपः पुनातु पादयो (इससे दोनों पैर)

ओ३म् सत्यं पुनातु पुनश्शिरसि (इससे पुनः मस्तक)

ओ३म् खं ब्रह्म पुनातु सर्वत्र (इससे सब अंग)

प्राणायाम मन्त्र

पूर्वोक्त रीति से प्राणायाम की क्रिया करते जावें और निम्नलिखित मंत्र जाप भी करते जावें :–

**ओ३म् भूः । ओ३म् भुवः । ओ३म् स्वः । ओ३म् महः ।
ओ३म् जनः । ओ३म् तपः । ओ३म् सत्यम् ।**

तैत्ति०१०/२७

इस प्रकार ईश्वर के गुणों का श्रद्धापूर्वक स्मरण करते हुए उसमें अपने को मग्न करके आनन्दित हों।

अघमर्षण मन्त्र

तत्पश्चात् सृष्टिकर्त्ता परमेश्वर और सृष्टि क्रम का विचार नीचे लिखे मन्त्रों से करें और जगदीश्वर को सर्वव्यापक, न्यायकारी, सर्वत्र, सर्वदा सब जीवों के कर्मों के द्रष्टा को निश्चित मान के पाप की ओर अपने आत्मा और मन को कभी न जाने देवें किन्तु धर्मयुक्त कर्मों में वर्तमान रखें। (संस्कार विधि)

ओ३म् ऋतञ्च सत्यञ्चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत।
ततो रात्र्यजायत ततः समुद्रो अर्णवः।
ओ३म् समुद्रादर्णवादधि संवत्सरो अजायत।
अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी
ओ३म् सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत्।
दिवञ्च पृथिवीम् चान्तरिक्षमथो स्वः ऋ० १०/१९०/१-३

वेद से लेके पृथिवी पर्यन्त जो यह जगत् है सो सब ईश्वर के नित्य सामर्थ्य से ही प्रकाशित हुआ है। ईश्वर सबको उत्पन्न करके सबमें व्यापक होके अन्तर्यामीरूप से सबके पाप-पुण्यों को देखता हुआ पक्षपात छोड़ के सत्य न्याय से सबको यथावत् फल दे रहा है।

ऐसा निश्चित जानके ईश्वर से भय करके सब मनुष्यों को उचित है कि मन, कर्म और वचन से पाप कर्मों को कभी न करें। इसी का नाम अघमर्षण है अर्थात् ईश्वर सबके अन्तःकरण के कर्मों को देख रहा है, इसमें पाप कर्मों का आचारण मनुष्य लोग सर्वथा छोड़ देवें। (पञ्चमहायज्ञ विधि)

आचमन मन्त्र

ओ३म् शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये।
शंयोरभि स्रवन्तु नः ॥

इस मन्त्र के अर्थ का मनन करते हुए पुनः तीन बार आचमन करें–

तदनन्तर गायत्र्यादि मन्त्रों के अर्थ विचारपूर्वक परमेश्वर की स्तुति अर्थात् परमेश्वर के गुण और उपकार का ध्यान कर पश्चात् प्रार्थना करें।

अर्थात् सब उत्तम कामों में ईश्वर का सहाय चाहें।

मनसा परिक्रमा मन्त्र

निम्नलिखित मन्त्रों से सर्वव्यापक परमात्मा की स्तुति-प्रार्थना करें।

इन मन्त्रों को पढ़ते जाना और अपने मन के चारों ओर बाहर-भीतर परमात्मा को पूर्ण जानकर निर्भय, निश्शङ्क, उत्साहित, आनन्दित, पुरुषार्थी रहें।

ओ३म् प्राची दिगग्निरधिपतिरसितो रक्षितादित्या इषवः। तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो, रक्षितृभ्यो नम, इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु। योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः॥ अथर्व ३/२७/१

ओ३म् दक्षिणा दिगिन्द्रोऽधिपतिस्तिरश्चिराजी रक्षिता पितर इषवः। तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो, रक्षितृभ्यो नम, इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु। योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः। अथर्व॰ ३/२७/२

ओ३म् प्रतीची दिग्वरुणोऽधिपतिः पृदाकू रक्षितान्नमिषवः तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो, रक्षितृभ्यो नम, इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु। योऽस्मान्द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः। अथर्व॰ ३/२७/३

ओ३म् उदीची दिक् सोमोऽधिपतिः स्वजो रक्षिताशनिरिषवः। तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम, इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु। योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः। अथर्व० ३/२७/४

ओ३म् ध्रुवा दिग्विष्णुरधिपतिः कल्माषग्रीवो रक्षिता वीरुधइषवः। तेभ्योनमोऽधिपतिभ्यो नमो, रक्षितृभ्यो नम, इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु। योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जन्भे दध्मः। अथर्व० ३/२७/५

ओ३म् ऊर्ध्वा दिग् बृहस्पतिरधिपतिः श्वित्रो रक्षिता वर्षमिषवः। तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु। योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः। अथर्व० ३/२७/६

उपस्थान मन्त्र

तत्पश्चात् परमात्मा का उपस्थान अर्थात् परमेश्वर के निकट में और तेरे अति निकट परमात्मा है, ऐसी बुद्धि करें।.......प्रेम में अत्यन्त मग्न होकर अपने आत्मा और मन को परमेश्वर में जोड़ के इन मन्त्रों से स्तुति और प्रार्थना करते रहें:—

ओ३म् उद्वयं तमसस्परि स्वः पश्यन्त उत्तरम्।
देवं देवत्रा सूर्य्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम्। यजु० ३५/१४

ओ३म् उदुत्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः। दृशे विश्वाय सूर्य्यम्। यजु॰ ३३/३१

ओ३म् चित्रं देवानमुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः। आ प्रा द्यावा पृथिवी अन्तरिक्ष छं सूर्य्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च स्वाहा यजु॰ ७/४२

ओ३म् तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्। पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतं श्रृणुयाम शरदः शतं प्र ब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात् यजु॰ ३६/२४

गुरु मन्त्र

गायत्री मन्त्र का अर्थ विचार पूर्वक परमात्मा की स्तुति और प्रार्थनोपासना करें :–

ओ३म् भुर्भूवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्। यजु॰ ३६/३

समर्पणम्

इस प्रकार से सब मन्त्रों के अर्थों से परमेश्वर की श्रद्धा से उपसाना करके समर्पण करें:–

हे ईश्वर दयानिधे! भवत्कृपयाऽनेन जपोपासनादि कर्मणा धर्मार्थकाममोक्षाणां सद्यः सिद्धिर्भवेन्नः।

नमस्कार मन्त्र

इसके पीछे ईश्वर को नमस्कार करें:—

ओ३म् नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शंकराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च।

ओ३म् शान्तिः-शान्तिः-शान्तिः।

●

देव-यज्ञ (अग्निहोत्र-हवन)

आचमन मन्त्र

शान्तचित्त होकर शुद्ध आसन पर बैठें और दाईं हथेली में निर्मल जल लेकर इन तीन मन्त्रों से तीन आचमन करें:-

ओ३म् अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा।१ इससे पहला

ओ३म् अमृतापिधानमसि स्वाहा।२ इससे दूसरा

ओ३म् सत्यं यशः श्रीर्मयि श्रीः श्रीयतां स्वाहा। ३ इससे तीसरा

तैत्ति॰ प्र॰ १० अनु॰ ३२-३५।

अङ्ग स्पर्श मन्त्र

बाईं हथेली में थोड़ा जल लेकर दायें हाथ की मध्यमा और अनामिका अंगुलियों से नीचे दिये छः मन्त्रों से अङ्ग स्पर्श तथा सातवें से मार्जन करें:—

ओ३म् वाङ्म आस्येऽस्तु।१ मुख को स्पर्श करें

ओ३म् नसोर्मे प्राणोऽस्तु।२ इससे नाक के दोनों छिद्र

ओ३म् अक्ष्णोर्मे चक्षुरस्तु।३ इससे दोनों आंखें

ओ३म् कर्णयोर्मे श्रोत्रमस्तु ।४ इससे दोनों कान

ओ३म् बाह्वोर्मे बलमस्तु ।५ इससे दोनों भुजाएं

ओ३म् ऊर्वोर्मे ओजोऽस्तु ।६ इससे दोनों जंघाएं

ओ३म् अरिष्टानि मेऽङ्गानि तनूस्तन्वा मे सह सन्तु ।७ इससे समस्त शरीर का मार्जन करें

पारस्कर गृह का० १/ कण्डिका ३/ सू० २५

यज्ञोपवीत धारण करने के मन्त्र

ओ३म् यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्। आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः ।१

ओ३म् यज्ञोपवीतमसि यज्ञस्य त्वा यज्ञोपवीतेनोपनह्यामि ।२ पार० गृ० २/२/११

अर्थः वेदोक्त कर्म में अधिकारी बनने के लिये इस **ब्रह्मसूत्रयज्ञोपवीत** जो अत्यन्त पवित्र है, परमात्मा के शुद्ध ज्ञान की प्राप्ति कराने वाला प्रेरक है, जो ईश्वर से स्वभाव-सिद्ध उपदिष्ट है, पूर्वकाल से चला आता है, आयु बढ़ाने के लिये विशेष हितकारी है, ऐसे ब्रह्मसूत्र को मैं धारण करता हूं। परमात्मा करे निर्मलता का बोधक यह यज्ञोपवीत बल और तेज वाला हो ।१

हे ब्रह्म सूत्र! तू यज्ञोपवीत है, मैं यज्ञ करने के लिये धारण करता हूं। मैं आज स्वयं यज्ञोपवीत से बंधता हूं। ईश्वर करे कि आज जो मैं यज्ञोपवीत धारण कर रहा हूं वह मेरे यज्ञ कार्यों की सिद्धि करने में सहायक हो।

ईश्वर स्तुति प्रार्थनोपासना मन्त्र

नीचे लिखे मन्त्रों का पाठ श्रद्धा और भक्ति से करें।

ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव।
यद्भद्रं तन्न आसुव।१ यजु॰ ३०/३

ओ३म् हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्। स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम।२ यजु॰ १३/४

ओ३म् य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवाः। यस्यच्छायाऽमृतं यस्य मृत्युः कस्मै देवाय हविषा विधेम।३ यजु॰ २५/१३

ओ३म् यः प्राणतो निमिषतो महित्वैक इद्राजा जगतो बभूव। य ईशे अस्यद्विपदश्चतुष्पदः कस्मै देवाय हविषा विधेम।४ यजु २३/३

ओ३म् येन द्यौरुग्रा पृथिवी च दृढा येन स्वः स्तभितं येन नाकः। यो अन्तरिक्षे रजसो विमानः कस्मै देवाय हविषा विधेम।५ यजु॰३२/६

ओ३म् प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परि ता बभूव। यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम

पतयो रयीणाम् ।६ ऋ॰ १०/१२१/१०

ओ३म् स नो बन्धुर्जनिता स विधाता धामानि वेद भुवनानि विश्वा। यत्र देवा अमृतमानशानास्तृतीये धामन्नध्यैरयन्त ।७ यजु॰ ३२/१०

ओ३म् अग्ने नय सुपथा रायेअस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्। युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठांते नम उक्तिं विधेम ।८ यजु॰ ४०/१६

अग्न्याधान मंत्र

ओ३म् भूर्भुवः स्वः। गोभिल॰ गृ॰प्र॰ १/ खं॰१/ सू॰ ११

इस मन्त्र का उच्चारण करके ब्राह्मण, क्षत्रिय वा वैश्य के घर से अग्नि ला अथवा घृत का दीपक जला, उससे कपूर में लगा, किसी एक पात्र में धर कर उसमें छोटी-छोटी लकड़ी लगा के यजमान वा पुरोहित उस पात्र को दोनों हाथों से उठा, यदि गर्म हो तो चिमटे से पकड़ कर अगले मन्त्र से अग्न्याधान करें।

ओ३म् भूर्भुवः स्वर्द्यौरिव भूम्ना पृथिवीव वरिम्णा। तस्यास्ते पृथिवी देवयजनि पृष्ठेऽग्निमन्नादमन्नाद्यायादधे ।१ यजु॰ ३/५

इस मन्त्र से कुण्ड के बीच में अग्नि को धर कर उस पर छोटे-छोटे काष्ठ और थोड़ा कपूर धर, अग्नि को खूब प्रदीप्त करें।

अग्नि प्रदीप्त करने का मन्त्र

ओ३म् उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्त्ते सं॰

सृजेथामयं च। अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वे देवा यजमानश्च सीदत। यजु० १५/५४

जब अग्नि समिधाओं में प्रविष्ट होने लगे तब चन्दन की अथवा पलाशादि की तीन समिधा आठ-आठ अंगुल की, घृत में डुबा उनमें से एक-एक निकाल, नीचे लिखे एक-एक मन्त्र से एक-एक समिधा यज्ञाग्नि में चढ़ावें। वे मन्त्र ये हैं:—

समिदाधान के मन्त्र

ओ३म् अयं त इध्म आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्द्धस्व चेद्ध वर्द्धय चास्मान् प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेनान्नाद्येन समेधय स्वाहा।१। इदमग्नये जातवेदसे - इदन्न मम। इससे पहली

ओ३म् समिधाग्निं दुवस्यत घृतैर्बोधयतातिथिम्। आस्मिन् हव्या जुहोतन स्वाहा। इदमग्नये इदन्न मम।२। इससे और

ओ३म् सुसमिद्धाय शोचिषे घृतं तीव्रं जुहोतन। अग्नये जातवेदसे स्वाहा। इदमग्नये जातवेदसे। इदन्न मम।३। इन दोनों मंत्रों से दूसरी समिधा

ओ३म् तन्त्वा समिद्भिरङ्गिरो घृतेन वर्द्धयामसि। बृहच्छोचा यविष्ठ्य स्वाहा। इदमग्नयेऽङ्गिरसेइदं न

मम ।४। यजु॰ ३/ १ से ३

इस मन्त्र से तीसरी समिधा की आहुति देवें।

इन मन्त्रों से समिदाधान करके नीचे लिखे मन्त्र से पांच घृत की आहुति देनी है।

घृताहुति मन्त्र

ओ३म् अयं त इध्म आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्द्धस्वचेद्धवर्द्धय चास्मान् प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्च-सेनान्नद्येन समेधय स्वाहा। इदमग्नये जातवेदसे-इदं न मम।

तत्पश्चात् अञ्जलि में जल लेके कुण्ड के पूर्व दिशा आदि चारों ओर छिड़कावें, इसके ये मन्त्र हैं:-

जल प्रसेचन के मन्त्र

ओ३म् अदितेऽनुमन्यस्व ।१ इस मन्त्र से पूर्व में

ओ३म् अनुमतेऽनुमन्यस्व ।२ इससे पश्चिम में

ओ३म् सरस्वत्यनुमन्यस्व ।३ इससे उत्तर में और

गोभिल गृ॰प्र॰ १/ खं॰ ३/ सू॰ १-३

ओ३म् देव सवितः प्र सुव यज्ञं प्रसुव यज्ञपतिं भगाय। दिव्यो गन्धर्वः केतपूः केतं नः पुनातु वाचस्पतिर्वाचं नः स्वदतु ।४ यजु॰ ३०/१

इस मन्त्र से वेदी के चारों ओर जल छिड़कावें।

आघारवाज्याहुतिमन्त्र

ओ३म् अग्नये स्वाहा। इदमग्नये-इदं न मम।

इस मन्त्र से वेदी के उत्तर भाग की ओर अग्नि में,

ओ३म् सोमाय स्वाहा! इदं सोमाय-इदं न मम

गो॰ प्र॰ १/ खं॰ ८/ सू॰ १-३

इस मन्त्र से वेदी के दक्षिण भाग में प्रज्वलित समिधा पर आहुति देवें, तत्पश्चात्–

आज्यभागाहुति मन्त्र

ओ३म् प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये-इदं न मम।

ओ३म् इन्द्राय स्वाहा। इदमिन्द्राय-इदं न मम।

इन दो मन्त्रों से कुण्ड के मध्य में दो आहुति देवें।

प्रातःकाल प्रधान होम 'मुख्य होम'

आघारवाज्यभागाहुति चार दे के नीचे लिखे मन्त्रों से प्रातःकाल अग्निहोत्र करें तथा घृत और हवन सामग्री की आहुति देवें:-

प्रातः-काल आहुति के मन्त्र

ओ३म् सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा।१

ओ३म् सूर्योवर्चोज्योतिर्वर्चः स्वाहा।२

ओ३म् ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा ।३

ओ३म् सजूर्देवेन सवित्रा सजूरुषसेन्द्रवत्या जुषाणः सूर्यो वेतु स्वाहा ।४

व्याहृति मन्त्र

ओ३म् भूरग्नये प्राणाय स्वाहा। इदमग्नये प्राणाय-इदं न मम ।१

ओ३म् भुवर्वायवेऽपानाय स्वाहा। इदं वायवेऽपानाय इदं न मम ।२

ओ३म् स्वरादित्याय व्यानाय स्वाहा। इदमादित्याय व्यानाय-इदं न मम ।३

ओ३म् भूर्भुवः स्वरग्निवाय्वादित्येभ्यः प्राणापानव्यानेभ्यः स्वाहा इदमग्निवाय्वादित्येभ्यः प्राणापानव्यानेभ्यः-इदं न मम ।४

ओ३म् आपो ज्योतिरसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरों स्वाहा ।५

ओ३म् यां मेधां देवगणाः पितरश्चोपासते। तया मामद्य मेधयाऽग्ने मेधाविनं कुरु स्वाहा ।६

ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद्भद्रं तन्न आसुव स्वाहा ।७

ओ३म् अग्ने नय सुपथा रायेऽअस्मान् विश्वानि देव

वयुनानि विद्वान्। युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते

नम उक्तिं विधेम स्वाहा।८

पूर्णाहुति

तत्पश्चात् तीन बार गायत्री मन्त्र

ओ३म् भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो नः प्रचोदयात् स्वाहा ।

इस मन्त्र से एक या अधिक आहुति देने के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र को तीन बार बोलकर एक-एक आहुति देवें:—

जो घृत एवं सामग्री शेष बचे, थोड़ी-थोड़ी यज्ञ कुण्ड में छोड़ते जावें।

ओ३म् सर्वं वै पूर्ण ७ स्वाहा।

●

सायंकाल का यज्ञ

आचमन मन्त्र

ओ३म् अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा।१

ओ३म् अमृतापिधानमसि स्वाहा ।२

ओ३म् सत्यं यशः श्रीर्मयि श्रीः श्रयतां स्वाहा।३

इससे तीसरा आचमन करके तत्पश्चात् जल लेकर नीचे लिखे मन्त्रों से अंगों का स्पर्श करें।

ओ३म् वाङ् म आस्येऽस्तु।

ओ३म् नसोर्मे प्राणोऽस्तु।

ओ३म् अक्ष्णोर्मे चक्षुरस्तु।

ओ३म् कर्णयोर्मे श्रोत्रमस्तु।

ओ३म् बाह्वोर्मे बलमस्तु।

ओ३म् ऊर्वोर्मे ओजोऽस्तु।

ओ३म् अरिष्टानि मेऽङ्गानि तनूस्तन्वा मे सहसन्तु।

इस मन्त्र से दाहिने हाथ से जल स्पर्श करके मार्जन करना।

ईश्वरस्तुतिप्रार्थनोपासना मंत्र

ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद्भद्रं तन्न आसुव।१

ओ३म् हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्। स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ।२

ओ३म् य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवाः। यस्य छायाऽमृतं यस्य मृत्युः कस्मै देवाय हविषा विधेम ।३

ओ३म् यः प्राणतो निमिषतो महित्वैक इद्राजा जगतो बभूव। य ईशे अस्य द्विपदश्चतुष्पदः कस्मै देवाय हविषा विधेम।४

ओ३म् येन द्यौरुग्रा पृथिवी च दृढा येन स्व स्तभितं

येन नाकः। यो अन्तरिक्षे रजसो विमानः कस्मै देवाय हविषा विधेम ।५

ओ३म् प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परि ता बभूव। यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम् ।६

ओ३म् स नो बन्धुर्जनिता स विधाता धामानि वेद भुवनानि विश्वा यत्र देवा अमृतमानशानास्तृतीये धामन्नध्यैरयन्त ।७

ओ३म् अग्ने नय सुपथा रायेऽअस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्। युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम उक्तिं विधेम ।८

अग्न्याधान

ओ३म् भूर्भुवः स्वः।

ओ३म् भूर्भुवः स्वर्द्यौरिव भूम्ना पृथिवीव वरिम्णा। तस्यास्ते पृथिवी देवयजनि पृष्ठेऽग्निं मन्नादमन्ना-द्यायादधे।

ओ३म् उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्ते स ꣳ सृजेथामयं च। अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वे

देवा यजमानश्च सीदत।

समिदाधान

ओ३म् अयं त इध्म आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्द्धस्व चेद्ध वर्धय चास्मान् प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेनान्नाद्येन समेधय स्वाहा। इदमग्नये जातवेदसे-इदं न मम।१

ओ३म् समिधाग्निं दुवस्यत घृतैर्बोधयतातिथिम्। आस्मिन् हव्या जुहोतन स्वाहा। इदमग्नये इदन्न मम।२

ओ३म् सुसमिद्धाय शोचिषे घृतं तीव्रं जुहोतन। अग्नये जातवेदसे स्वाहा। इदमग्नये जातवेदसे-इदन्नमम।४

ओ३म् तन्त्वा समिद्भिरङ्गिरो घृतेन वर्द्धयामसि। बृहच्छोचा यविष्ठ्य स्वाहा। इदमग्नयेऽङ्गिरसे-इदं न मम।५

घृताहुति मन्त्र

इस मन्त्र का पांच बार उच्चारण करके पांच घृताहुति देवें—

ओ३म् अयं त इध्म आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्द्धस्व चेद्ध वर्धय चास्मान् प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेनान्नाद्येन

समेधय स्वाहा। इदमग्नये जातवेदसे-इदं न मम।

जल प्रसेचन मंत्र

ओ३म् अदितेऽनुमन्यस्व। गोभिल गृ० १/३/१

ओ३म् अनुमतेऽनुमन्यस्व। गोभिल गृ०१/३/२

ओ३म् सरस्वत्यनुमन्यस्व। गोभिल गृह० १/३/३

ओ३म् देव सवितः प्र सुव यज्ञं प्र सुव यज्ञपतिं भगाय। दिव्यो गन्धर्वः। केतपूः केतं नः पुनातु वाचस्पतिर्वाचं नः स्वदतु। यजु० ३०/१

इससे कुण्ड के चारों ओर

आघारावाज्याहुति मन्त्र

ओ३म् अग्नये स्वाहा। इदमग्नये-इदन्न मम ।१

उत्तर भाग में (पश्चिम से पूर्व की ओर)

ओ३म् सोमाय स्वाहा। इदं सोमाय-इदन्न मम।२

दक्षिण भाग में (पश्चिम से पूर्व की ओर)

आज्यभागाहुति मन्त्र

ओ३म् प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये-इदं न मम।

ओ३म् इन्द्राय स्वाहा। इदमिन्द्राय-इदं न मम।

इन दो मन्त्रों से कुण्ड के मध्य में दो आहुति देनी।

आगे के मंत्रों से घृत के साथ शाकल्य सामग्री की आहुति भी देवें।

ओ३म् अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा ।१

ओ३म् अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा ।२

ओ३म् अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा ।३

ओ३म् सजूर्देवेन सवित्रा सजूरात्र्येन्द्रवत्या जुषाणो अग्निर्वेतु स्वाहा ।४

ओ३म् भूरग्नये प्राणाय स्वाहा । इदमग्नये प्राणाय-इदं न मम ।१

ओ३म् भुवर्वायवेऽपानाय स्वाहा । इदं वायवेऽपानाय-इदं न मम ।२

ओम् स्वरादित्याय व्यानाय स्वाहा। इदमादित्याय व्यानाय-इदं न मम ।३

ओ३म् भूर्भुवः स्वरग्निवाय्वादित्येभ्यः प्राणापानव्यानेभ्यः । इदं न मम ।४

ओ३म् आपो ज्योतीरसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरों स्वाहा ।५

ओ३म् यां मेधां देवगणाः पितरश्चोपासते। तया मामद्यमेधयाऽग्ने मेधाविनं कुरु स्वाहा ।६

ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव । यद् भद्रं तन्न आसुव स्वाहा ।७

ओ३म् अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान् । युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम उक्तिं विधेम स्वाहा ।८

एक या अधिक बार गायत्री मन्त्र

ओ३म् भूर्भुवः स्वः । तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि । धियो यो नः प्रचोदयात् स्वाहा ।

बोलकर आहुति देने का पश्चात्

ओ३म् सर्वं वै पूर्ण ॐ स्वाहा ।

इस मन्त्र का तीन बार उच्चारण करके एक-एक आहुति देवें । बचा हुआ घृत तथा सामग्री थोड़ी-थोड़ी यज्ञकुण्ड में छोड़ें ।

●

प्रातः तथा सायं दोनों समय का सम्मिलित यज्ञ

आचमन मन्त्र

ओ३म् अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा ।१

ओ३म् अमृतापिधानमसि स्वाहा ।२

ओ३म् सत्यं यश श्रीर्मयि श्रीः श्रयतां स्वाहा ।३

इससे तीसरा आचमन करके तत्पश्चात् जल लेकर नीचे लिखे मन्त्रों से अंगों का स्पर्श करें ।

ओ३म् वाङ् म आस्येऽस्तु ।

ओ३म् नसोर्मे प्राणोऽस्तु ।

ओ३म् अक्ष्णोर्मे चक्षुरस्तु ।

ओ३म् कर्णयोर्मे श्रोत्रमस्तु ।

ओ३म् बाह्वोर्मे बलमस्तु ।

ओ३म् ऊर्वोर्मे ओजोऽस्तु ।

ओ३म् अरिष्टानि मेऽङ्गानि तनुस्तन्वा मे सहसन्तु ।

इस मन्त्र से दाहिने हाथ से जल स्पर्श करके मार्जन करना ।

ईश्वरस्तुतिप्रार्थनोपासना मंत्र

ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव यद्भद्रं तन्न आसुव ।१

ओ३म् हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत् । स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ।२

ओ३म् य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवाः । यस्य छायाऽमृतं यस्य मृत्युः कस्मै देवाय हविषा विधेम ।३

ओ३म् यः प्राणतो निमिषतो महित्वैक इद्राजा जगतो

बभूव। य ईशे अस्य द्विपदश्चतुष्पदः कस्मै देवाय हविषा विधेम ।४

ओ३म् येन द्यौरुग्रा पृथिवी च दृढा येन स्व स्तभितं येन नाकः। यो अन्तरिक्षे रजसो विमानः कस्मै देवाय हविषा विधेम।५

ओ३म् प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परि ता बभूव। यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम् ।६

ओ३म् स नो बन्धुर्जनिता स विधाता धामानि वेद भुवनानि विश्वा। यत्र देवा अमृतमानशानास्तृतीये धामन्नध्यैरयन्त ।७

ओ३म् अग्ने नय सुपथा रायेऽअस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्। युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम उक्तिं विधेम ।८

अग्न्याधान

ओ३म् भूर्भुवः स्वः।

ओ३म् भूर्भुवः स्वर्द्यौरिव भूम्ना पृथिवीव वरिम्णा।

तस्यास्ते पृथिवी देवयजनि पृष्ठेऽग्निमन्ना-

दमन्नाद्यायादधे ।

ओ३म् उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्त्ते सꣳ सृजेथामयं च । अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वे देवा यजमानश्च सीदत ।

समिदाधान

ओ३म् अयं त इध्म आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्द्धस्व चेद्ध वर्धय चास्मान् प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेनान्नाद्येन समेधय स्वाहा । इदमग्नये जातवेदसे-इदं न मम ।१

इस मन्त्र से पहली समिधा

ओ३म् समिधाग्निं दुवस्यत घृतैर्बोधयतातिथिम् । आस्मिन् हव्या जुहोतन स्वाहा । इदमग्नये-इदन्न मम ।२

इससे तथा

ओ३म् सुसमिद्धाय शोचिषे घृतं तीव्रं जुहोतन । अग्नये जातवेदसे स्वाहा । इदमग्नये जातवेदसे इदन्न मम ।३

इन दो मन्त्रों से दूसरी समिधा

ओ३म् तन्त्वा समिद्भिरङ्गिरो घृतेन वर्द्धयामसि । बृहच्छोचा यविष्ठ्य स्वाहा ।। इदमग्नयेऽङ्गिरसे-इदं न मम ।४ ।

इस मन्त्र से तीसरी समिधा

घृताहुति मन्त्र

इस मन्त्र का पांच बार उच्चारण करके पांच घृताहुति देवें

ओ३म् अयं त इध्म आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्द्धस्व चेद्ध वर्धय चास्मान् प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेनान्नाद्येन समेधय स्वाहा। इदमग्नये जातवेदसे-इदं न मम

जल प्रसेचन मंत्र

ओ३म् अदितेऽनुमन्यस्व। इससे पूर्व भाग में

ओ३म् अनुमतेऽनुमन्यस्व। इससे पश्चिम भाग में

ओ३म् सरस्वत्यनुमन्यस्व। इससे उत्तर भाग में

ओ३म् देव सवितः प्र सुव यज्ञं प्र सुव यज्ञपतिं भगाय। दिव्यो गन्धर्वः केतपूः केतं नः पुनातु वाचस्पतिर्वाचं नः पुनातु वाचस्पतिर्वाचं नः स्वदतु।

इससे कुण्ड के चारों ओर

आघारवाज्याहुति मन्त्र

ओ३म् अग्नये स्वाहा। इदमग्नये-इदं न मम।

इस मन्त्र से कुण्ड में उत्तर भाग की ओर अग्नि में,

ओ३म् सोमाय स्वाहा। इदं सोमाय-इदं न मम।

इस मन्त्र से दक्षिण भाग कीं ओर अग्नि में

आज्यभागाहुति मन्त्र

ओ३म् प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये-इदं न मम।

ओ३म् इन्द्राय स्वाहा। इदमिन्द्राय-इदं न मम।

इन दोनों मन्त्रों से कुण्ड के मध्य में एक आहुति देवें।

नीचे लिखे मन्त्रों से घृत के साथ शाकल्य सामग्री की आहुतियाँ देवें–

ओ३म् सूर्य्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्य्यः स्वाहा।१

ओ३म् सूर्य्यो वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा ।२

ओ३म् ज्योतिः सूर्य्यो ज्योतिः स्वाहा ।३

ओ३म् सजूर्देवेन सवित्रा सजूरुषसेन्द्रवत्या। जुषाणः सूर्य्यो वेतु स्वाहा।४

ओ३म् भूरग्नये प्राणाय स्वाहा। इदमग्नये प्राणाय इदन्न मम ।५।

ओ३म् भुवर्वायवेऽपानाय स्वाहा। इदं वायवेअपानाय इदन्न मम।६।

ओ३म् स्वरादित्याय व्यानाय स्वाहा। इदमादित्याय व्यानाय इदन्न मम ।७।

ओ३म् भूर्भुवः स्वरग्निवाय्वादित्येभ्यः प्राणापानव्यानेभ्यः स्वाहा। इदमग्निवाय्वादित्येभ्यः प्राणापानव्यानेभ्यः-

इदन्न मम ।८

ओ३म् आपो ज्योति रसो ऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरों स्वाहा ।९

ओ३म् यां मेधां देवगणाः पितरश्चोपासते। तया मामद्यमेधयाऽग्ने मेधाविनं कुरु स्वाहा ।१०

ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव । यद् भद्रं तन्न आसुव स्वाहा ।११

ओ३म् अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान् । युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम उक्तिं विधेम स्वाहा ।१२

ओ३म् अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा ।१३

ओ३म् अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वचः स्वाहा ।१४

ओ३म् अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा ।१५

(मौन आहुति)

ओ३म् सजूर्देवेन सवित्रा सजूरात्र्येन्द्रवत्या जुषाणो अग्निर्वेतु स्वाहा ।१६

ओ३म् भूरग्नये प्राणाय स्वाहा । १७

ओ३म् भुववार्यवेऽपानाय स्वाहा ।१८

ओ३म् स्वरादित्याय व्यानाय स्वाहा ।१९

ओ३म् भूर्भुवः स्वरग्निवाय्वादित्येभ्यः प्राणापानव्यानेभ्यः स्वाहा ।२०

ओ३म् आपो ज्योतिरसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरों स्वाहा ।२१

ओ३म् यां मेधां देवगणाः पितरश्चोपासते। तया मामद्यमेधयाऽग्ने मेधाविनं कुरु स्वाहा ।२२

ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव । यद् भद्रं तन्न आसुव स्वाहा ।२३

ओ३म् अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान् । युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम उक्तिं विधेम स्वाहा ।२४

एक या अधिक बार गायत्री मन्त्र

ओ३म् भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात् स्वाहा।

तत्पश्चात् **ओ३म् सर्वं वै पूर्णं ७ स्वाहा।**

इस मन्त्र का तीन बार उच्चारण करके एक-एक आहुति देवें। बचा हुआ घृत तथा सामग्री थोड़ी-थोड़ी यज्ञ कुण्ड में छोड़ें।

विशेष यज्ञ

साप्ताहिक सत्संग, संस्कार तथा अन्य विशेष अवसरों पर

बृहद् यज्ञ विधि

आचमन मन्त्र

ओ३म् अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा ।१

ओ३म् अमृतापिधानमसि स्वाहा ।२

ओ३म् सत्यं यशः श्रीर्मयि श्रीः श्रीयतां स्वाहा ।३

इससे तीसरा आचमन करके तत्पश्चात् जल लेकर नीचे लिखे मन्त्रें से अंगों का स्पर्श करें :—

ओ३म् वाङ् म आस्येऽस्तु । ओ३म् नसोर्मे प्राणोऽस्तु ।
ओ३म् अक्ष्णोर्मे चक्षुरस्तु । ओ३म् कर्णयोर्मे श्रोत्रमस्तु ।
ओ३म् बाह्वोर्मे बलमस्तु । ओ३म् ऊर्वोर्मे ओजोऽस्तु ।
ओ३म् अरिष्टानि मेऽङ्गानि तनूस्तन्वा मे सहसन्तु ।

इस मन्त्र से दाहिने हाथ से जल स्पर्श करके मार्जन करना।

ईश्वरस्तुतिप्रार्थनोपासना मंत्र

नीचे लिखे मन्त्रों का पाठ अर्थ सहित श्रद्धा और भक्ति से करें।

संस्कारों, विशेष यज्ञों, साप्ताहिक सत्संगों, पारिवारिक सत्संगों में इन मन्त्रों का पाठ एक विद्वान् अथवा योग्य सज्जन अर्थ सहित स्थिर चित्त होकर परमात्मा में ध्यान लगाकर करें और सब लोग उसमें ध्यान लगाकर सुनें एवं विचारें—

ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव । यद्भद्रं

तन्न आसुव ।१

अर्थ—हे सकल जगत् के उत्पत्तिकर्त्ता, समग्र ऐश्वर्ययुक्त, शुद्ध स्वरूप, सब सुखों के दाता परमेश्वर! आप कृपा करके हमारे सम्पूर्ण दुर्गुण, दुर्व्यसन और दुःखों को दूर कर दीजिये। जो कल्याणकारक गुण, कर्म, स्वभाव और पदार्थ हैं। वह सब हमको प्राप्त कीजिए।

ओ३म् हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्। स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ।२

अर्थ—जो स्वप्रकाशस्वरूप और जिसने प्रकाश करने हारे सूर्य, चन्द्रमादि पदार्थ उत्पन्न करके धारण किये हैं, जो उत्पन्न हुए सम्पूर्ण जगत् का प्रसिद्ध स्वामी एक ही चेतनस्वरूप था, जो सब जगत् के उत्पन्न होने से पूर्व वर्तमान था, वह इस भूमि और सूर्यादि को धारण कर रहा है, हम लोग उस सुखस्वरूप शुद्ध परमात्मा के लिए ग्रहण करने योग्य योगाभ्यास और अति प्रेम से विशेष भक्ति किया करें।

ओ३म् य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवाः। यस्य छायाऽमृतं यस्य मृत्युः कस्मै देवाय हविषा विधेम ।३

अर्थ—जो आत्मज्ञान का दाता, शरीर आत्मा और समाज के बल का देने हारा, जिसकी सब विद्वान् लोग उपासना करते हैं और जिसका प्रत्यक्ष सत्यस्वरूप शासन, न्याय अर्थात् शिक्षा को मानते हैं, जिसका आश्रय ही मोक्ष सुखदायक है जिसका न मानना अर्थात् भक्ति न करना ही मृत्यु आदि दुःख का हेतु है। हम लोग उस सुखस्वरूप सकल ज्ञान के देने हारे परमात्मा को प्राप्ति के लिये आत्मा और अन्तःकरण से भक्ति अर्थात् उसी की आज्ञा पालन करने में तत्पर रहें।

ओ३म् यः प्राणतो निमिषतो महित्वैक इद्राजा जगतो बभूव। य ईशे अस्य द्विपदश्चतुष्पदाः कस्मै देवाय हविषा विधेम ।४

अर्थ—जो प्राण वाले और अप्राणिरूप जगत् का अपनी अनन्त महिमा से एक ही विराजमान राजा है जो इस मनुष्यादि और गो आदि प्राणियों के शरीर की रचना करता है, हम लोग उस सुख-स्वरूप सकल ऐश्वर्य को देने हारे परमात्मा के लिये अपनी सकल उत्तम सामग्री को उसकी आज्ञा पालन में समर्पित करके विशेष भक्ति करें।

ओ३म् येन द्यौरुग्रा पृथिवी च दृढा येन स्व स्तभितं येन नाकः। यो अन्तरिक्षे रजसो विमानः कस्मै देवाय हविषा विधेम ।५

अर्थ—जिस परमात्मा के तीक्ष्ण स्वभाव वाले सूर्य आदि और भूमि को धारण किया है, जिस जगदीश्वर ने सुख को धारण किया और जिस ईश्वर ने दुःख रहित मोक्ष को धारण किया है, जो आकाश में सब लोक-लोकान्तरों को विशेष भानयुक्त अर्थात् जैसे आकाश में पक्षी उड़ते हैं, वैसे सब लोकों का निर्माण करता और भ्रमण कराता है, हम लोग उस सुखदायक कामना करने के योग्य परब्रह्म की प्राप्ति के सब सामर्थ्य से विशेष भक्ति करें।

ओ३म् प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परिता बभूव। यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम् ।६

अर्थ—हे सब प्रजा के स्वामी परमात्मा! आप से भिन्न दूसरा कोई उन इन सब उत्पन्न हुए जड़-चेतनादि को नहीं तिरस्कार करता है, अर्थात् आप सर्वोपरि

हैं। जिस-जिस पदार्थ की कामना वाले होके हम लोग भक्ति करें, आपका आश्रय लेवें और वाच्छा करें, उस-उस की कामना हमारी सिद्ध होवे, जिससे हम लोग धनैश्वर्यों के स्वामी होंवें।

ओ३म् स नो बन्धुर्जनिता स विधाता धामानि वेदभुवनानि विश्वा। यत्र देवा अमृतमानशानास्तृतीये धामन्नध्यैरयन्त।७

अर्थ—हे मनुष्यो! वह परमात्मा अपनें लोगों का भ्राता के समान सुखदायक सकल जगत् का उत्पादक, वह सब कामों का पूर्ण करनेहारा, सम्पूर्ण लोकमात्र और नाम स्थान जन्मों को जानता है और जिस सांसारिक सुख-दुःख से रहित नित्यानन्दयुक्त मोक्षस्वरूप धारण करनेहारे परमात्मा के मोक्ष का प्राप्त होके विद्वान् लोग स्वेच्छापूर्वक विचरते हैं, वही परमात्मा अपना गुरु, आचार्य, राजा और न्यायाधीश है। अपने लोग मिलके, सदा उसकी भक्ति किया करें।

ओ३म् अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्। युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम उक्तिं विधेम।८

अर्थ—हे स्वप्रकाश ज्ञानस्वरूप, सब जगत् के प्रकाश करने हारे सकल सुखदाता परमेश्वर! आप जिससे सम्पूर्ण विद्यायुक्त हैं, कृपा करके हम लोगों को विज्ञान वा राज्यादि ऐश्वर्य की प्राप्ति के लिये अच्छे धर्मयुक्त आप्त लोगों के मार्ग से सम्पूर्ण प्रज्ञान और उत्तम कर्म प्राप्त कराइये और हमसे कुटिलतायुक्त पापरूप कर्म को दूर कीजिये। इस कारण हम लोग आपकी बहुत प्रकार की स्तुतिरूप नम्रतापूर्वक प्रशंसा सदा किया करें और सर्वदा आनन्द में रहें।

स्वस्तिवाचन

ओ३म् अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्।

होतारं रत्नधातमम् ।१ (ऋक् १/ १/ १)

ओ३म् स नः पितेव सूनवेऽग्ने सूपायनो भव । सचस्वा नः स्वस्तये ।२ (ऋक् १/ १/ ९)

ओ३म् स्वस्ति नो मिमीतामश्विना भगः स्वस्ति देव्यदितिरनर्वणः । स्वस्ति पूषा असुरो दधातु नः स्वस्ति द्यावापृथिवी सुचेतना ।३

ओ३म् स्वस्तये वायुमुप ब्रवामहै सोमं स्वस्ति भुवनस्य यस्पतिः । बृहस्पतिं सर्वगणं स्वस्तये स्वस्तय आदित्यासो भवन्तु नः ।४

ओ३म् विश्वे देवा नो अद्या स्वस्तये वैश्वानरो वसुरग्नि स्वस्तये । देवा अवन्त्वृभवः स्वस्ति नो रुद्रः पात्वंहसः ।५

ओ३म् स्वस्ति मित्रावरुणा स्वस्ति पथ्ये रेवति । स्वस्ति न इन्द्रश्चाग्निश्च स्वस्ति नो अदिते कृधि ।६

ओ३म् स्वस्ति पन्थामनुचरेम सूर्याचन्द्रमसाविव । पुनर्ददताघ्नता जानता सं गमेमहि ।७

(ऋक्०५/५१/११ से १५ तक)

ओ३म् ये देवानां यज्ञिया यज्ञियानां मनोर्यजत्रा अमृता ऋतज्ञाः । ते नो रासन्तामुरुगायमद्य यूयं पात

स्वस्तिभिः सदा नः ।८ (ऋक्०७/३५/१५)

ओ३म् येभ्यो माता मधुमत्पिन्वते पयः पीयूषं द्यौरदितिरद्रिबर्हा । उक्थशुष्मान् वृषभरान्त्स्वप्नसस्ताँ आदित्याँ अनुमदा स्वस्तये ।९

ओ३म् नृचक्षसो अनिमिषन्तो अर्हणा बृहद्देवासो अमृतत्वमानशुः । ज्योतीरथा अहिमाया अनागसो दिवो वर्ष्माणं वसते स्वस्तये ।१०

ओ३म् सम्राजो ये सुवृधो यज्ञमाययुरपरिह्वृता दधिरे दिवि क्षयम् । तां आ विवास नमसा सुवृक्तिभिर्महो आदित्यां अदितिं स्वस्तये ।११

ओ३म् को वः स्तोमं राधति यं जुजोषथ विश्वे देवासो मनुषो यतिष्ठन । को वोऽध्वरं तुविजाता अरंकरद्यो नः पर्षदत्यंह स्वस्तये ।१२

ओ३म् येभ्यो होत्रां प्रथमामायेजे मनुः समिद्धाग्निर्मनसा सप्तहोतृभिः । त आदित्या अभयं शर्म यच्छत सुगा नः कर्त्त सुपथा स्वस्तये ।१३

ओ३म् य ईशिरे भुवनस्य प्रचेतसो विश्वस्य

स्थातुर्जगतश्च मन्तवः । ते नः कृतादकृतादेनसस्पर्यद्या

देवासः पिपृता स्वस्तये ।१४

ओ३म् भरेष्विन्द्रं सुहवं हवामहेऽहोमुचं सुकृतं दैव्यम् जनम् । अग्निं मित्रं वरूणं सातये भगं द्यावापृथिवीमरुतः स्वस्तये ।१५

ओ३म् सुत्रामाणं पृथिवीं द्यामनेहसं सुशर्माणमदितिं सुप्रणीतिम् । दैवीं नावं स्वरित्रामनागसमस्रवन्तीमा रुहेमा स्वस्तये ।१६

ओ३म् विश्वे यजत्रा अधिवोचतोतये त्रायध्वं नो दुरेवाया अभिहुतः । सत्यया वो देवहूत्या हुवेम श्रृण्वतो देवा अवसे स्वस्तये ।१७

ओ३म् अपामीवामप विश्वामनाहुतिमपारातिं दुर्विदत्रामघायतः । आरे देवा द्वेषो अस्मद्युयोतनोरुणः शर्म यच्छता स्वस्तये ।१८

ओ३म् अरिष्टः स मर्त्तो विश्व एधते प्र प्रजाभिर्जायते धर्मणस्परि । यमादित्यासो नयथा सुनीतिभिरति विश्वानि दुरिता स्वस्तये ।१९

ओ३म् यं देवासोऽवथ वाजसातौ यं शूरसाता मरुतो हिते धने । प्रातर्यावाणं रथमिन्द्र सानसिमरिष्यंतमा

रुहेमा स्वस्तये ।२०

ओ३म् स्वस्ति नः पथ्यासु धन्वसु स्वस्त्यप्सु वृजने स्वर्वति। स्वस्ति नः पुत्रकृथेषु योनिषु स्वस्ति राये मरुतो दधातन ।२१

ओ३म् स्वस्तिरिद्धि प्रपथे श्रेष्ठा रेक्ण स्वत्यभि या वाममेति। सा नो अमा सो अरणे नि पातु स्वावेशा भवतु देवगोपा ।२२

ओ३म् इषे त्वोर्जे त्वा वायवस्थ देवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मण आप्यायध्वमघ्न्याऽइंद्राय भागंप्रजावतीरनमीवाऽ अयक्ष्मा मा वस्तेन ऽईशत माघश ७ सो ध्रुवाऽ अस्मिन् गोपतौ स्यात बह्वीर्यजमानस्य पशून् पाहि ।२३ (यजु० १/१)

ओ३म् आ नो भद्रा क्रतवो यन्तु विश्वतोऽदब्धासो ऽअपरीतास उद्भिदः। देवा नो यथासदमिद्वृधेऽ असन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवे दिवे ।२४

ओ३म् देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयतां देवाना ७ रातिरभि नो निवर्त्तताम्। देवाना ७ सख्यमुपसेदिमा वयं देवा न आयुः प्रतिरन्तु जीवसे ।२५

ओ३म् तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियञ्जिन्वमवसे हूमहे वयम्। पूषा नो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये।२६

ओ३म् स्वस्ति न ऽ इंद्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो ऽ अरिष्टनेमिस्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ।२७

ओ३म् भद्रं कर्णेभिः श्रृणुयां देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः। स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवा ँ सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः ।२८

(यजु० अध्याय २५ मंत्र १४,१५,१८,१६ तथा २५)

ओ३म् अग्न आ याहि वीतये गृणानो हव्यदातये नि होता सत्सि बर्हिषि।२६

ओ३म् त्वमग्ने यज्ञानां होता विश्वेषां हितः। देवेभिर्मानुषे जने।३०

(साम०१/१-२)

ओ३म् ये त्रिषप्ताः परियन्ति विश्वारूपाणि विभ्रतः। वाचस्पतिर्बला तेषां तन्वो अद्य दधातु मे।३१

(अथर्व०१/१/१)

इति स्वस्तिवाचनम्

शान्तिकरण

ओ३म् शं न इन्द्राग्नी भवतामवोभिः शन्न इन्द्रावरुणा रातहव्या। शमिन्द्रासोमा सुविताय शंयोः शन्न इन्द्रापूषणा वाजसातौ ।१

ओ३म् शं नो भगः शमु नः शंसो अस्तु शन्नः पुरन्धिः शमु सन्तु रायः। शं नः सत्यस्य सुयमस्य शंसः शं नो अर्य्यमा पुरुजातो अस्तु ।२

ओ३म् शं नो धाता शमुधर्त्ता नो अस्तु शं न उरुची भवतु स्वधाभिः। शं रोदसी बृहति शं नो अद्रिः शं नो देवानां सुहवानि सन्तु ।३

ओ३म् शं नो अग्निर्ज्योतिरनीको अस्तु शं नो मित्रावरुणावश्विना शम्। शं नः सुकृतां सुकृतानि सन्तु शं न इषिरो अभिवातु वातः ।४

ओ३म् शं नो द्यावापृथिवी पूर्वहुतौ शमन्तरिक्षं दृशये नो अस्तु। शं न ओषधीर्वनिनो भवन्तु शं नो रजसस्पतिरस्तु जिष्णुः ।५

ओ३म् शं न इंद्रो वसुभिर्देवो अस्तु शमादित्येभिर्वरुणः

सुशंसः । शं नो रुद्रो रुद्रेभिर्जलाषः शं नस्त्वष्टाग्नाभिरिह श्रृणोतु ।६ (ऋक्० ७/३५/१-६)

ओ३म् शं नः सोमो भवतु ब्रह्म शं नः शंनो ग्रावाणः समु संतु यज्ञाः । शं नः स्वरुणां मितयो भवन्तु शं नः प्रस्वः शम्वस्तु वेदिः ।७ (यजु०१५/२१)

ओ३म् शं नः सूर्य उरुचक्षा उदेतु शं नश्चतस्रः प्रदिशो भवन्तु । शं नः पर्वता ध्रुवयो भवन्तु शं नः सिंधवः शमु संत्वापः ।८

ओ३म् शं नो अदितिर्भवतु व्रतेभिः शं नो भवन्तु मरुतः स्वर्काः । शं नो विष्णुः शमु पूषा नो अस्तु शं नो भवित्रं शम्वस्तु वायुः ।६

ओ३म् शन्नो देवः सविता त्रायमाणः शं नो भवन्तुषसो विभातीः । शं नः पर्जन्यो भवतु प्रजाभ्यः शं नः क्षेत्रस्य पतिरस्तु शम्भुः ।१०

ओ३म् शं नो देवा विश्व देवा भवन्तु शं सरस्वती सह धीभिरस्तु । शमभिषाचः शमु रातिषाचः शं नो दिव्याः पार्थिवाः शं नो अप्याः ।११

ओ३म् शं न सत्यस्य पतयो भवन्तु शं नो अर्वन्तः शमु सन्तु गावः। शं नः ऋभवः सुकृतः सुहस्ता शं नो भवन्तु पितरो हवेषु ।१२

ओ३म् शं नो अज एकपाद् देवो अस्तु शं नोऽहिर्बुध्न्यः शं समुद्रः। शं नो अपां नपात्पेरुरस्तु शं नः पृश्निर्भवतु देवगोपा ।१३ (ऋक्०७/३५/८-१३)

ओ३म् इन्द्रो विश्वस्य राजति। शं नो अस्तु द्विपदे शं चतुष्पदे ।१४

ओ३म् शं नो वातः पवता ꣳशं नस्तपतु सूर्यः। शं नः कनिक्रद्देवः पर्जन्यो अभिवर्षतु ।१५

ओ३म् अहानि शं भवन्तु नः श ꣳ रात्रीः प्रतिधीयताम्। शं न इन्द्राग्नी भवतामवोभिः शं न इन्द्रावरुणा रातहव्या। शं नः इन्द्रापूषणा वाजसातौ शमिन्द्रासोमा सुविताय शंयोः ।१६

ओ३म् शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शंयोरभिस्रवन्तु नः ।१७

ओ३म् द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ꣳ शान्तिः। पृथिवी

शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वं शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि।१८

ओ३म् तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्। पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शत ँ श्रृणुयाम शरदः शतं प्र ब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात्।१९

(यजु० ३६/८/ मंत्र- १०, ११, १२, १७ तथा २४)

ओ३म् यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं तदु सुप्तस्य तथैवैति। दूरङ्गमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिव-सङ्कल्पमस्तु।२०

ओ३म् येन कर्माण्यपसो मनीषिणो यज्ञे कृण्वन्ति विदथेषु धीराः। यदपूर्वं यक्षमन्तः प्रजानां तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु।२१

ओ३म् यत्प्रज्ञानमुत चेतो धृतिश्च यज्ज्योतिरन्तरमृतं प्रजासु। यस्मान्न ऋते किंचन कर्म क्रियते तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु।२२

ओ३म् येनेदं भूतं भुवनं भविष्यत्परिगृहीतममृतेन सर्वम्। येन यज्ञस्तायते सप्तहोता तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ।२३

ओ३म् यस्मिन्नृचः सामयजू ꣳषि यस्मिन् प्रतिष्ठिता रथनाभाविवाराः। यस्मिंश्चित ꣳ सर्वमोतं प्रजानां तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ।२४

ओ३म् सुषारथिरश्वानिव यन्मनुष्यान्नेनीयतेऽ-भीशुभिर्वाजिनइव। हृत्प्रतिष्ठं यदजिरं जविष्ठं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ।२५· यजु० ३४/ मंत्र १-६

ओ३म् स नः पवस्य शं गवे शं जनाय शमर्वते। शं राजन्नोषधीभ्यः ।२६ साम०१/३

ओ३म् अभयं नः करत्यन्तरिक्षमभयं द्यावा पृथिवी उभे इमे। अभयं पश्चादभयं पुरस्तादुत्तरादधरादभयं नो अस्तु ।२७ अथर्व० १९/१९/५

ओ३म् अभयं मित्रादभयममित्रादभयं ज्ञातादभयं परोक्षात्। अभयं नक्तमभयं दिवा नः सर्वा आशा मम मित्रं भवन्तु ।२८ अथर्व० १७/१५/६

इति शान्तिकरणम्

अग्न्याधानमंत्रः

ओ३म् भूर्भुवः स्वः। गोभिल गृ० प्र० १/ खं० १/ सू० ११

ओ३म् भूर्भुवः स्वर्द्यौरिव भूम्ना पृथिवीव वरिम्णा। तस्यास्ते पृथिवी देवयजनि पृष्ठेऽग्निमन्नाद-मन्नाद्यायादधे। यजु० ३/५

अग्नि प्रदीप्त करने का मंत्र

ओ३म् उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्त्ते स ꣳसृजेथामयं च। अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वे देवा यजमानश्च सीदत। यजु० १५।५४

समिदाधान के मंत्र

ओ३म् अयन्त इध्म आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्धस्व चेद्ध वर्धय चास्मान् प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेनान्नाद्येन समेधय स्वाहा। इदमग्नये जातवेदसे इदन्न मम।१

इससे पहली समिधा

ओ३म् समिधाग्निं दुवस्यत घृतैर्बोधयतातिथिम्। आस्मिन् हव्या जुहोतन स्वाहा। इदमग्नये इदं न मम।२

इससे और

ओ३म् सुसमिद्धाय शोचिषे घृतं तीव्रं जुहोतन। अग्नये जातवेदसे स्वाहा। इदमग्नये जातवेदसे इदन्न मम।३

इससे दूसरी

ओ३म् तन्त्वा समिद्भिरङ्गिरो घृतेन वर्द्धयामसि। बृहच्छोचायविष्ठय स्वाहा। इदमग्नयेऽङ्गिरसे इदं न मम।४

यजु॰ अ॰ ३ मं॰ /१/२/३

इस मंत्र से तीसरी समिधा की आहुति देवें।

घृताहुति के मन्त्र

ओ३म् अयन्त इध्म आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्धस्व चेद्ध वर्धय चास्मान् प्रजया पशुभिर्ब्रह्म वर्चसेनान्नाद्येन समेधय स्वाहा। इदमग्नये जातवेदसे इदन्न मम।१

इस मंत्र को पांच बार पढ़कर पांच आहुति देवें।

जल-प्रसेचन मन्त्र

ओ३म् अदितेऽनुमन्यस्व। इससे पूर्व दिशा में

ओ३म् अनुमतेऽनुमन्यस्व। इससे पश्चिम दिशा में

ओ३म् सरस्वत्यनुमन्यस्व। इससे उत्तर दिशा में

गोभिल गृ॰ प्र॰ १/ ख॰ ३/ सू॰ १-२

ओ३म् देव सवितः प्रसुव यज्ञं प्रसुव यज्ञपतिं भगाय।

दिव्यो गन्धर्वः केतपूः केतं नः पुनातु वाचस्पतिर्वाचं नः स्वदतु। यजु० ३०/१

इस मंत्र से वेदी के चारों ओर जल छिड़कावें।

आघारवाज्याहुति मन्त्र

ओ३म् अग्नये स्वाहा। इदमग्नये इदन्नमम

वेदी के उत्तर भाग अग्नि में

ओ३म् सोमाय स्वाहा। इदं सोमाय इदन्नमम।

वेदी के दक्षिण भाग अग्नि में

आज्यभागाहुतिमन्त्र

ओ३म् प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये इदं न मम।

ओ३म् इन्द्राय स्वाहा। इदमिन्द्राय इदं न मम।

इन दोनों मंत्रों से वेदी के मध्य में दो आहुति देनी।

ओ३म् भूरग्नये स्वाहा। इदमग्नये इदं न मम।१

ओ३म् भुवर्वायवे स्वाहा। इदं वायवे इदं न मम।२

ओ३म् स्वरादित्याय स्वाहा। इदमादित्याय इदं न मम।३

ओ३म् भूर्भुवः स्वरग्निवाय्वादित्येभ्यः स्वाहा। इदमग्निवाय्वादित्येभ्यः इदं न मम।४

स्विष्टकृतमंत्राहुति

ओ३म् यदस्य कर्मणोऽत्यरीरिचं यद्वा न्यूनमिहाकरम् ।
अग्निष्टत्स्विष्टकृद्विद्यात्सर्वं स्विष्टं सुहुतं करोतु मे ।
अग्नये स्विष्टकृते सुहुतहुते सर्वप्रायश्चित्ताहुतीनां
कामनां समर्द्धयित्रेसर्वान्नः कामान्त्समर्द्धय स्वाहा ।
इदमग्नये स्विष्टकृते इदन्न मम ।

प्राजापत्याहुति

इस मंत्र को मन में बोलकर घृताहुति देवें

ओ३म् प्रजापतये स्वाहा । इदं प्रजापतये इदन्न मम ।

यजु० २२/३२

प्रधान होम सम्बन्धी चार आज्याहुति

ओ३म् भूर्भुवः स्वः । अग्न आयूँषि पवस आ
सुवोर्ज्जमिषं च नः । आरे बाधस्व दुच्छुनां स्वाहा ।
इदमग्नये पवमानाय इदन्न मम ।१

ओ३म् भूर्भुवः । स्वः । अग्निर्ऋषिः पवमाना पाञ्चजन्यः
पुरोहितः । तमीमहे महागयं स्वाहा । इदमग्नये
पवमानाय इदन्न मम ।२

ओ३म् भूर्भुवः स्वः । अग्ने पवस्व स्वपा अस्मे वर्चः

सुवीर्यम्। दधद्रयिं मयि पोषं स्वाहा। इदमग्नये पवमानाय इदन्न मम ।३

ओ३म् भूर्भुवः स्वः। प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परिता बभूव। यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणां स्वाहा। इदं प्रजापतये इदन्न मम ।४

अष्ट आज्याहुति मन्त्र

ओ३म् त्वं नो अग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेळोऽवयासिसीष्ठाः। यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषांसि प्र मुमग्ध्यस्मत् स्वाहा। इदमग्नि-वरुणाभ्यां। इदन्न मम ।१

ओ३म् स त्वं नो अग्नेऽवमो भवोती नेदिष्ठो अस्या उषसो व्युष्टौ। अव यक्ष्व नो वरुणं रराणो वीहि मृडीकं सुहवो न एधि स्वाहा। इदमग्निवरुणाभ्यां इदन्न मम ।२

ओ३म् इमं मे वरूण श्रुधी हवमद्या च मृळय। त्वामवस्युरा चके स्वाहा। इदं वरुणाय इदन्न मम ।३

ओ३म् तत्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते

यजमानो हविर्भिः। अहेळमानो वरुणेह बोध्युरुशंस मा न आयुः प्र मोषीः स्वाहा। इदं वरुणाय इदं न मम।४

ओ३म् ये ते शतं वरुण ये सहस्रं यज्ञिया पाशा वितता महान्तः। तेभिर्नो अद्य सवितोत विष्णुविश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा। इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यः मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यः इदन्न मम।५

ओ३म् अयाश्चाग्नेऽस्यनभिशस्तिपाश्च सत्यमित्व-मयासि अया नो यज्ञं वहास्यया नो धेहि भेषज ꣳ स्वाहा। इदमग्नये अयसे इदं न मम।६

ओ३म् उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं विमध्यमं श्रथाय। अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम स्वाहा।७ इदं वरुणायाऽऽदित्यायादितये च इदं न मम। ७

ओ३म् भवन्तं नः समनसौ सचेतसावरेपसौ। मा यज्ञ ꣳहिꣳसिष्टं मा यज्ञपतिं जातवेदसौ शिवौ भवतमद्य नः स्वाहा। इदं जातवेदोभ्यां इदं न मम।८

प्रातःकाल आहुति के मन्त्र

ओ३म् सूर्यो ज्योतिर्ज्योति सूर्यः स्वाहा ।१

ओ३म् सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा ।२

ओ३म् ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा ।३

ओ३म् सजूर्देवेन सवित्रा सजूरुषसेन्द्रवत्या जुषाणः सूर्योवेतु स्वाहा ।

सायंकाल आहुति के मन्त्र

ओ३म् अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा ।१

ओ३म् अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा ।२

ओ३म् अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा ।३

(इस मन्त्र को मन में बोलकर तीसरी आहुति देवें)

ओ३म् सजूर्देवेन सवित्रा सजूर्रात्र्येन्द्रवत्या जुषाणो अग्निर्वेतु स्वाहा ।

ओ३म् भूरग्नये प्राणाय स्वाहा । इदमग्नये प्राणाय इदन्न मम ।

ओ३म् स्वरादित्याय व्यानाय स्वाहा । इदमादित्याय व्यानाय इदन्न मम ।

ओ३म् भूर्भुवः स्वरग्निवाय्वादित्येभ्यः प्राणापान

व्यानेभ्यः स्वाहा । इदमग्निवाय्वादित्येभ्यः प्राणापान-

व्यानेभ्यः इदन्न मम।

ओ३म् आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरों स्वाहा।

ओ३म् यां मेधां देवगणाः पितरश्चोपासते। तया मामद्यमेधयाऽग्ने मेधाविनं कुरु स्वाहा।

ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद्भद्रं तन्न आसुव स्वाहा।

ओ३म् अग्ने नय सुपथा राये ऽअस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान् युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम उक्तिं विधेम स्वाहा।

तत्पश्चात् गायत्री मन्त्र से एक या अधिक आवश्यकतानुसार आहुति देवें।

गायत्री मन्त्र

ओ३म् भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्।

पूर्णाहुति मन्त्र

शेष घृत शाकल्य सामग्री से तीन बार पूर्णाहुति देवें–

ओ३म् सर्वं वै पूर्णं ꣡ स्वाहा।

ओ३म् सर्वं वै पूर्णं ꣡ स्वाहा।

ओ३म् सर्वं वै पूर्णं ꣡ स्वाहा।

पाक्षिक यज्ञ

पक्ष यज्ञ अर्थात् पौर्णमासी और अमावस्या के दिन नैत्यिक अग्निहोत्र (देव यज्ञ) या विशेष यज्ञ में स्थालीपाक (मोहन भोग, मीठा भात, खीर, लड्डू आदि) की आहुतियाँ देवें:—

पूर्णमासी की आहुतियाँ

ओ३म् अग्नये स्वाहा ।१। ओ३म् अग्नि षोमाभ्यां स्वाहा ।२। ओ३म् विष्णवे स्वाहा ।३।

घृत की ४ व्याहृति आहुतियाँ

ओ३म् भूरग्नये स्वाहा। इदमग्नये इदन्न मम ।१। ओ३म् भुवर्वायवे स्वाहा। इदं वायवे-इदन्न मम ।२। ओ३म् स्वरादित्यांय स्वाहा। इदमादित्याय इदन्न मम ।३। ओ३म् भूर्भुवः स्वरग्निवाय्वादित्येभ्यः स्वाहा। इदमग्निवाय्वादित्येभ्यः इदन्न मम ।४। ओ३म् पूर्णा पश्चादुत पूर्ण पुरस्तादुन्मध्यतः पौर्णमासी जिगाय। तस्यां देवैः संवसन्तो महित्वा नाकस्य पृष्ठे समिषा मदेम ।१। ओ३म् वृषभं वयं पौर्णमासं यजामहे। स नो ददात्वक्षितां रयिमनुपदस्वतीम् ।२। ओ३म् प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा रूपाणि परिभूर्जजान। यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो

रयीणाम् ।३। ओ३म् पौर्णमासी प्रथमा यज्ञिया सीदह्नां रात्रिणामतिशर्वरेषु ये त्वां यज्ञेर्यज्ञिये अर्धयन्तत्यमी ते नाके सुकृतः प्रविष्टाः ।४।

अमावस्या की आहुतियाँ

ओ३म् अग्नये स्वाहा ।१। ओ३म् इन्द्राग्नीभ्यां स्वाहा ।२। ओ३म् विष्णवे स्वाहा ।३।

घृत की ४ व्याहृति आहुतियां

ओ३म् भूरग्नये स्वाहा। इदमग्नये-इदन्न मम ।१। ओ३म् भुवर्वायवे स्वाहा। इदं वायवे-इदन्न मम ।२। ओ३म् स्वरादित्याय स्वाहा। इदमादित्याय इदन्न मम ।३। ओ३म् भूर्भुवः स्वरग्निवाय्वादित्येभ्यः स्वाहा। इदमग्निवाय्वादित्येभ्यः इदन्न मम ।४। ओ३म् यत् ते देवा अकृण्वन् भागधेयममावास्ये संवसन्तो महित्वा। तेना नो यज्ञं पिपृहि विश्ववारे रयिं नो धेहि सुभगे सुवीरम् ।१। ओ३म् अहमेवास्म्यमावास्या ३ मामावसन्ति सुकृतो मयीमे। मयि देवा उभये साध्याश्चेन्द्र ज्येष्ठाः समगच्छन्त सर्वे ।२। ओ३म् आगन् रात्री संगमनी

वसूनामूर्ज पुष्टं वस्वादेशयन्ती। अमावास्यायै हविषा

विधेमोर्ज दुहाना पयसा न आगन् ।३।
ओ३म् अमावास्ये न त्वदेतान्यन्यो विश्व रूपाणि परिभूर्जजान। यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम् ।४।

●

३.पितृ-यज्ञ

अब तीसरा **'पितृ यज्ञ'** कहते हैंः उसके दो भेद हैं-**एक तर्पण/दूसरा श्राद्ध**। तर्पण उसे कहते हैं-जिस कर्म से विद्वान् रूप देव, ऋषि और पितरों को सुख युक्त करते हैं। उसी प्रकार जो उन लोगों का श्रद्धा से अर्थात् जो प्रत्यक्ष है, (जीवित हैं), उन्हीं में घटता है, मृतकों में नहीं, क्योंकि उनका प्राप्ति और उनका प्रत्यक्ष होना दुर्लभ है। इसी से उनकी सेवा भी किसी प्रकार से नहीं हो सकती, किन्तु जो उनका नाम लेकर देवे, वह पदार्थ उनको कभी नहीं मिल सकता, इसलिए मृतकों को सुख पहुंचाना सर्वथा असम्भव है। इसी कारण विद्यमानों के अभिप्राय से तर्पण और श्राद्ध वेद में कहा है। सेवा करने योग्य और सेवक अर्थात् सेवा करने वाले इनके प्रत्यक्ष होने पर यह सब काम हो सकता है। तर्पण आदि कर्म में सत्कार करने योग्य तीन हैं—**देव, ऋषि** और **पितर**। उनमें से देवों में प्रमाणः-

देव—जो सत्य बोलने, सत्य मानने और सत्य कर्म करने वाले हैं वे देव। ......जो झूठ से अलग होके सत्य को प्राप्त होवें वे देव जाति में गिने जाते हैं और जो सत्य से अलग होके झूठ को प्राप्त हो वे मनुष्य असुर और राक्षस कहे जाते हैं, इससे व्यक्ति सब काल में सत्य ही कहे, माने और करे। सत्यव्रत का आचरण करने वाला मनुष्य यशस्वियों में यशस्वी होने से देव और उससे उलटे कर्म करने वाला असुर होता है। इस कारण से यहां विद्वान् ही **देव** हैं।

ऋषि–सब विद्याओं को पढ़के जो पढ़ाना है, वह ऋषि कर्म कहाता है। उसे पढ़ने और पढ़ाने से ऋषियों का ऋण अर्थात् उनको उत्तम-उत्तम पदार्थ देने से निवृत्त होता है और जो इन ऋषियों की सेवा करता है, वह उनको सुख करने वाला होता है। यही व्यवहार अर्थात् विद्या कोष की रक्षा करने वाला होता है। जो सब विद्याओं को जानके सबको पढ़ाता है, उसको **ऋषि** कहते हैं।

जो पढ़ के पढ़ाने के लिये विद्यार्थियों का स्वीकार करना सो आर्षेय अर्थात् ऋषियों का कर्म कहाता है, जो उस कर्म को करता हुआ उन ऋषियों और देवों के लिए प्रसन्न करने वाले पदार्थों का निवेदन तथा सेवा करता है वह विद्वान् अति पराक्रमी होके विशेष ज्ञान को प्राप्त होता है। जो विद्वान् और विद्या को ग्रहण करने वाला है, उसका **ऋषि** नाम होता है। इस कारण से इस आर्षेय कर्म को सब मनुष्य स्वीकार करें।

पितर–(ईश्वर सबका ज्ञाता है कि) पिता का स्वामी अपने पुत्र, पौत्र वा नौकरों के लिए सब दिन के लिए आज्ञा देके कहे कि जो मेरे पिता, पितामहादि, मातामहादि तथा आचार्य और इससे भिन्न भी विद्वान् लोग अवस्था अथवा ज्ञान से वृद्ध, मान्य करने योग्य हों (ये ही पितर कहाते हैं) उन सबके आत्माओं को यथायोग्य सेवा से प्रसन्न किया करो। सेवा करने के पदार्थ ये हैं–जो उत्तमोत्तम जल, अनेक विध रस, घी, दूध, अनेक संस्कारों से सिद्ध किए रोगनाश करने वाले उत्तमोत्तम अन्न, सब प्रकार के उत्तमोत्तम फल हैं, इन सब पदार्थों से उनकी सेवा सदा करते रहो जिससे उनकी आत्मा प्रसन्न होके तुम लोगों को आशीर्वाद देते रहें कि तुम लोग भी सदा प्रसन्न रहो। हे पूर्वोक्त पितृलोगो! तुम सब हमारे अमृत रूप पदार्थों के भोगों से सदा सुखी रहो और जिस पदार्थ को तुमको अपने लिए इच्छा हो, जो-जो हम लोग कर सकें, उस-उस की आज्ञा सदा करते रहो। हम लोग मन, वचन, कर्म से तुम्हारे सुख करने में स्थित हैं। तुम लोग किसी प्रकार का दुःख मत पाओ। जैसे तुम लोगों ने बाल्यावस्था और ब्रह्मचर्य्याश्रम में हम लोगों को सुख दिया है वैसे हमको भी आप लोगों का प्रत्युपकार करना अवश्य चाहिए, जिससे हमको कृतघ्नता-दोष न प्राप्त हो।

जीवित देवों, ऋषियों और पितरों का श्राद्ध और तर्पण करना ही **'पितृ-यज्ञ'** है। ऋग्, यजुर्वेद आदि के वचन हैं और मनुजी ने भी कहा है कि-पितरों को **वसु**, पितामहों को **रुद्र** और प्रपितामहों को **आदित्य** कहते हैं, यह सनतान श्रुति है। (महर्षि दयानन्द सरस्वती-पञ्चमहायज्ञविधिः से)

●

४. बलिवैश्वदेव यज्ञ

ओ३म् अग्नये स्वाहा ।१। ओ३म् सोमाय स्वाहा ।२। ओ३म् अग्निषोमाभ्याम् स्वाहा ।३। ओ३म् विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा ।४। ओ३म् धन्वन्तरये स्वाहा ।५। ओ३म् कुह्वै स्वाहा ।६। ओ३म् अनुमत्यै स्वाहा ।७। ओ३म् प्रजापतये स्वाहा ।८। ओ३म् सह द्यावापृथिवीभ्यां स्वाहा ।९। ओ३म् स्विष्टकृते स्वाहा ।१०।

इन प्रत्येक मन्त्रों से एक-एक बार आहुति प्रज्वलित अग्नि में छोड़ें। पश्चात् थाली या पत्तल में पूर्व दिशादि क्रमानुसार यथाक्रम इन मन्त्रों से भाग रखें:-

ओ३म् सानुगायेन्द्राय नमः ।१। ओ३म् सानुगाय यमाय नमः ।२। ओ३म् सानुगाय वरुणाय नमः ।३। ओ३म् सानुगाय सोमाय नमः ।४। ओ३म् मरुद्भ्यो नमः ।५। ओ३म् अद्भ्यो नमः ।६। ओ३म् वनस्पतिभ्यो नमः ।७। ओ३म् श्रिये नमः ।८।

ओ३म् भद्रकाल्यै नमः ।९। ओ३म् ब्रह्मपतये नमः ।१०। ओ३म् वास्तुपतये नमः ।११। ओ३म् विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः ।१२। ओ३म् दिवाचरेभ्यो भूतेभ्यो नमः ।१३। ओ३म् नक्तञ्चारिभ्यो भूतेभ्यो नमः ।१४। ओ३म् सर्वात्मभूतये नमः ।१५। ओ३म् पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः ।१६।

इन भागों को यदि कोई अतिथि उस समय आ जाये तो उसको जिमा देवें अथवा अग्नि में छोड़ देवें।

इसके अनन्तर लवणान्न अर्थात् दाल, भात, शाक रोटी, आदि लेकरः—

शुनां च पतितानां च श्वपचां पापरोगिणाम्।
वायसानां कृमीणां च शनकैनिर्वपेद् भुवि।

कुत्तों, कङ्गालों, पतितों, कुष्ठी आदि रोगियों, काक आदि पक्षियों और चींटी आदि कृमियों के लिये छः भाग अलग-अलग बांट के दे देवें, और सदा उनकी प्रसन्नता प्राप्त करते रहें।

५. अतिथि यज्ञ

अतिथि उसको कहते हैं कि जिसकी कोई तिथि निश्चित न हो अर्थात् अकस्मात् धार्मिक, सत्योपदेशक, सबके उपकारार्थ सर्वत्र घूमने वाला पूर्ण विद्वान्, जितेन्द्रिय, परम योगी, संन्यासी गृहस्थ के यहाँ आवे तो उसको, अर्घ और आचमनीय तीन प्रकार का जल देकर, पश्चात् आसन पर सत्कार पूर्वक बिठाकर, खान-पान आदि उत्तमोत्तम पदार्थों से सेवा-शुश्रुषा करके उनको प्रसन्न करें। पश्चात् सत्सङ्ग कर, उनसे ज्ञान-विज्ञान आदि जिससे धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति होवे, ऐसे-ऐसे उपदेशों का श्रवण करे और अपना चाल-चलन भी उनके उपदेशानुसार रखे। समय पाके गृहस्थ राजादि भी अतिथिवत् सत्कार करने योग्य हैं।

ब्रह्म यज्ञ—के करने से विद्या, शिक्षा, धर्म, सभ्यता आदि शुभ गुणों की वृद्धि।

अग्निहोत्र से वायु, वृष्टि, जल की शुद्धि होकर वृष्टि द्वारा संसार को सुख प्राप्त होना अर्थात् शुद्ध वायु का श्वास, स्पर्श, खानपान से आरोग्य, वृद्धि, बल, पराक्रम बढाके धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष का अनुष्ठान पूरा होगा। इसलिए इसको **देव यज्ञ** कहते हैं।

पितृयज्ञ से—(गृहस्थ) जब माता, पिता और ज्ञानी महात्माओं की सेवा करेगा तब उसका ज्ञान बढ़ेगा। उससे सत्यासत्य का निर्णय कर, सत्य का ग्रहण और असत्य का त्याग करके दुखी रहेगा। दूसरा कृतज्ञता अर्थात् जैसी सेवा माता, पिता और आचार्य ने सन्तान और शिष्यों की करी है, उसका बदला देना उचित है।

बलिवैश्वदेव यज्ञ—हवन करने का प्रयोजन यह है कि पाकशालास्थ वायु का शुद्ध होना और अज्ञान अदृष्ट जीवों की हत्या होती है, उनका प्रत्युपकार कर देना।

जब तक उत्तम अतिथि जगत् में नहीं होते तब तक उन्नति भी नहीं होती। उनके सब सदेशों में घूमने और सत्योपदेश करने से पाखण्ड की वृद्धि नहीं होती और सर्वत्र गृहस्थों को सहज से सत्य विज्ञान की प्राप्ति होती रहती है और मनुष्य

मात्र में एक ही धर्म स्थिर रहता है। बिना अतिथियों के सन्देह निवृत्ति के बिना दृढ़ निश्चय भी नहीं होता।

(महर्षि दयानन्द कृत ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका, सत्यार्थ प्रकाश, संस्कार विधि, पञ्चमहायज्ञ विधि के आधार पर)

हवन–यज्ञोपरान्त

देव यज्ञ (हवन) की पूर्णाहुति के उपरान्त घृत पात्र में थोड़ा-सा शुद्ध जल डालकर यज्ञाग्नि पर हल्का सा गर्म करके दाएं हाथ की अंगुलियों के द्वारा दोनों हाथों पर लगाकर यज्ञाग्नि पर तपा-तपा कर-

ओ३म् तेजऽसि तेजो मयि धेहि। ओ३म् वीर्यमसि वीर्यं मयि धेहि। ओ३म् बलमसि बलं मयि धेहि। ओ३म् ओजोऽसि ओजो मयि धेहि। ओ३म् मन्युरसि मन्युं मयि धेहि। ओ३म् सहोऽसि सहो मयि धेहि।।

यजु० १९/९

इस मन्त्र का उच्चारण करते हुए अपने मुख, नेत्र, ललाट, कपोलादि पर मर्दन करें।

यज्ञ-प्रार्थना

पूजनीय प्रभो! हमारे भाव उज्ज्वल कीजिये।
छोड़ देवें छल-कपट को मानसिक बल दीजिये।।१
वेद की बोलें ऋचायें सत्य को धारण करें।
हर्ष में हों मग्न सारे शोक-सागर से तरें।।२।
अश्वमेधादिक रचायें यज्ञ पर उपकार को।
धर्म-मर्यादा चला कर लाभ दें संसार को।।३।
नित्य श्रद्धा भक्ति से यज्ञादि हम करते रहें।

रोगपीड़ित विश्व के सन्ताप सब करते रहे।।४।
भावना मिट जाय मन से पाप अत्याचार की।
कामनायें पूर्ण होंवे यज्ञ से नर-नर की।।५।
लाभकारी हो हवन हर जीवधारी के लिए।
वायु जल सर्वत्र हो शुभ गन्ध को धारण किए।।६
स्वार्थभाव मिटे हमारा प्रेम-पथ विस्तार हो।
इदन्नमम का सार्थक प्रत्येक में व्यवहार हो।।७
प्रेमरस में तृप्त होकर वन्दना हम कर रहे।
नाथ करुणा रूप करुणा आपकी सब पर रहे।।८

मंगल कामना

ओ३म् सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयः
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा किश्चद् दुःखभाग्भवेत्।।

सबका भला करो भगवान, सब पर दया करो भगवान।
सब पर कृपा करो भगवान, सबका सब विध हो कल्याण।।

●

हे ईश! सब सुखी हों कोई न हो दुःखारी।
सब हों निरोग भगवन, धन धान्य के भण्डारी।
सब भद्र भाव देखें, सन्मार्ग के पथिक हों।
दुखिया न कोई होवे, सृष्टि से प्राणधारी।।

●

द्विज वेद पढ़ें, सुविचार बढ़ें, बल पाये चढ़ें नित ऊपर को।
अविरुद्ध रहें, ऋजु पंथ गहे, परिवार कहें वसुधा भर को।।
ध्रुव धर्म धरें, पर दुःख हरें, तन त्याग तरें भवसागर को।
दिन फेर पिता वर दे सविता हम आर्य करें जगती भर को।।

राष्ट्रीय प्रार्थना

ओ३म् आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामा राष्ट्रे राजन्यः शूर इषव्योऽतिव्याधी महारथो जायताम दोग्ध्रीः धेनुर्वोढाऽनड्वानाशुः सप्तिः पुरधिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायताम्। निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम्।। यजु० म० २२/२२

ब्रह्मन् सुराष्ट्र में हों द्विज ब्रह्म तेज धारी।
क्षत्री महारथी हों, अरिदल विनाशकारी।।
होंवें दुधारू गौवें, पशु अश्व आशुवाही।
आधार राष्ट्र की हों, नारी सुभग सदा ही।।
बलवान् सभ्य योद्धा, यजमान पुत्र होंवें।
इच्छानुसार वर्षे, पर्जन्य ताप धोवें।
फल-फूल से लदी हों, औषध अमोघ सारी।
हो योग क्षेमकारी, स्वाधीनता हमारी।।

१. भजन प्रार्थना

हे दयामय हम सबों को शुद्धताई दीजिये।

दूर करके हर बुराई को भलाई दीजिये।।टेक।।
ऐसी कृपा और अनुग्रह हम पै हो परमात्मा।
हों सभासद् इस सभा के सब के सब धर्मात्मा।।१
हो उजाला सबके मन में ज्ञान के प्रकाश से।

और अन्धेरा दूर सारा हो अविद्या नाश से।।२
खोटे कर्मों से बचें और तेरे गुण गावें सभी।
छूट जावें दुःख सारे सुख सदा पावें सभी।।३
सारी विद्याओं को सीखें ज्ञान से भरपूर हों।
शुभ कर्म में होवें तत्पर दुष्ट गुण सब दूर हों।।४
यज्ञ-हवन से हो सुगन्धित अपना भारतवर्ष देश।
वायु जल सुखदायी होवें जायें मिट सारे क्लेश।।५
वेद के प्रचार में होंवे सभी पुरुषार्थी।
होंवे आपस में प्रीति और बनें परमार्थी।।६
लोभी और कामी-क्रोधी कोई भी हम में न हो।
सर्व व्यसनों से बचें और छोड़ देवें मोह को ।।७
अच्छी संगत में रहें और वेद मार्ग पर चलें।
तेरे ही होवें उपासक और कुकर्मों से बचें।।८
कीजिये हम सब का हृदय शुद्ध अपने ज्ञान से।
मान भक्तों में बढ़ाओ सबका भक्ति ज्ञान से।।९

२. जय जय पिता

जय जय पिता परम आनन्ददाता। जगदादि कारण मुक्ति-प्रदाता।।
अनन्त और अनादि विशेषण हैं तेरे। सृष्टि का स्रष्टा है तू धर्त्ता संहरता।।
सूक्ष्म से सूक्ष्म, तू है स्थूल इतना। कि जिसमें यह ब्रह्माण्ड सारा समाता।।
मैं लालित व पालित हूं पितृस्नेह का। यह प्राकृतिक सम्बन्ध है तुझ से ताता।।
करो शुद्ध निर्मल मेरे आत्मा को। करूं मैं विनय नित्य सायं व प्रातः।।
मिटाओ मेरे भय आवागमन के। फिरूं न जन्म पाता और बिलबिलाता।।
बिना तेरे है कौन दीनन का बन्धु? कि जिसको मैं अपनी अवस्था सुनाता।।
अमी रस पिलाओ कृपा करके मुझको। रहूं सर्वथा तेरी कीर्ति को गाता।।

३. विश्वपति के ध्यान में

विश्वपति के ध्यान में, जिसने लगाई हो लगन।

क्यों न हो उसको शांति, क्यों न हो उसका मन मगन।।
काम, क्रोध, लोभ, मोह, शत्रु हैं सब महा बली।
इनके हनन के वास्ते, जितना हो तुझसे कर यतन।।
ऐसा बना स्वभाव को, चित्त की शान्ति से तू।
पैदा न हो ईर्षा की आग, दिल में करे कहीं जलन।।
मित्रता सबसे मन में रख, ठीक कर अपना तू चलन।
उससे अधिक न है कोई, जिसने रचा है यह जगत्।।
उसका ही रख तू आसरा, उसकी तू पकड़ शरण।
छोड़ दे राग-द्वेष को, मन में तू उसका ध्यान कर।।
तुझ पै दयाल होवेंगे, निश्चय है यह परमात्मन्।
जैसे किसी का हो अमल, वैसा ही पाता है वह फल।।
दुष्टों को कष्ट मिलता है, शिष्टों का होता दुःख हरण।।
आप दया स्वरूप हैं, आप ही का है आसरा।।
कृपा दृष्टि कीजिये, मुझ पै हो जबं समय कठिन।।
मन में हो मेरे चांदना, मोक्ष का रास्ता मिले।
मार के मन में जो **केवल**, इन्दियों का करे दमन।।

४. हुआ ध्यान में ईश्वर के

हुआ ध्यान में ईश्वर के जो मगन, उसे कोई क्लेश लगा न रहा।
जब ज्ञान की गंगा में नहाया, तो मन में मैल जरा न रहा।।
परमात्मा को जब आत्मा में, लिया देख ज्ञान की आंखों से।
प्रकाश हुआ मन में उसके, कोई उससे भेद छिपा न रहा।।
पुरुषार्थ ही इस दुनिया में, सब कामना पूरी करता है।
मन चाहा फल उसने पाया। जो आलसी बन के पड़ा न रहा।।
दुःखदाई हैं सब शत्रु हैं, यह विषय हैं जितने दुनियाँ के।
वही पार हुआ भवसागर से, जो जाल में इनके फंसा न रहा।।

यहां वेद विरुद्ध जब मत फैले, प्रकृति की पूजा जारी हुई।

जब वेद की विद्या लुप्त हुई, फिर ज्ञान का पांव जमा न रहा।।
यहां बड़े-बड़े महाराज हुये, बलवान् हुये विद्वान् हुये।
पर मौत के पंजे से **केवल** कोई दुनियां में आके बचा न रहा।।

५. आज मिल सब गीत गाओ

आज मिल सब गीत गाओ उस प्रभु का धन्यवाद।
जिसका यश नित गाते हैं गन्धर्व मुनिजन धन्यवाद।।
मन्दिरों में कन्दरों में, पर्वतों के शिखर पर।
देते हैं लगातार सौ-सौ बार मुनिवर धन्यवाद।।
करते हैं जंगल में मंगल, पक्षिगण हर शाख पर।
पाते हैं आनन्द मिल गाते हैं स्वर भर धन्यवाद।।
कूप में, तालाब में, सागर की गहरी धार में।
प्रेम-रस में तृप्त हो करते हैं जल-चर धन्यवाद।।
शादियों में कीर्तनों में, यज्ञ-उत्सव के आदि में।
मीठे स्वर में चाहिये करें नारी-नर सब धन्यवाद।।
गान कर **अमीचन्द** भजनानन्द ईश्वर की स्तुति।
ध्यान धर सुनते हैं श्रोता, कान धर-धर धन्यवाद।।

६. शरण प्रभु की आओ रे!

शरण प्रभु की आओ रे, यही समय है प्यारे !
आओ प्रभु गुण गाओ रे, यही समय है प्यारे !
उदय हुआ ओ३म् नाम का भानु, आओ दर्शन पाओ रे !
छल-कपट और झूठ को त्यागो, सत्य में चित्त लगाओ रे !
अमृत झरना झरता है इससे, पीकर अमर हो जाओ रे !
मानुष जन्म अमोलक है यह, वृथा न इसे गंवाओ रे !
धन्य दया जो सबको पाले, मत उसको बिसराओ रे !
प्रभु की भक्ति बिन नहीं मुक्ति, दृढ़ विश्वास जमाओ रे !

करलो नाम प्रभु का सुमिरन, नहीं पीछे पछताओ रे !

छोटे-बड़े सब मिलके खुशी से, गुण ईश्वर के गाओ रे !

७. तू है सच्चा पिता

टेक—तू है सच्चा पिता, सारे संसार का ओ३म् प्यारा।
तू ही, तू ही है रक्षक हमारा।
चांद, सूरज सितारे बनाये, पृथिवी आकाश, पर्वत सजाए।
अन्त आया नहीं, तेरा पार पाया नहीं, पार वारा।। **तू ही तू ही है...**
पक्षीगण राग सुन्दर हैं गाते, जीव-जन्तु भी सिर हैं झुकाते।
उसको ही सुख मिला, तेरी राह पर चला, जो प्यारा।। **तू ही तू ही है..**
पाप पाखंड हमसे छुड़ाओ, वेद मार्ग पै हमको चलाओ।
लगे भक्ति में मन, करे संध्या हवन, विश्व सारा।। **तू ही तू ही है...**
अपनी भक्ति में मन को लगाओ, कष्ट सारे हमारे मिटाओ।
दुखिया कंगालों का और धन वालों का, तू सहारा।। **तू ही तू ही है...**

८. अजब हैरान हूं भगवन् !

अजब हैरान हूं भगवन् ! तुम्हें कैसे रिझाऊँ मैं।
कोई वस्तु नहीं ऐसी जिसे सेवा में लाऊँ मैं।।
करूँ मैं किस तरह आह्वान, कि तुम मौजूद हो हर जाँ।
निरादर है बुलाने को, अगर घण्टी बजाऊँ मैं।। **अजब हैरान हूं....**
तुम्हीं हो मूर्ति में भी, तुम्हीं व्यापाक हो फूलों में।
भला भगवान पर भगवान को कैसै चढ़ाऊँ मैं।। **अजब हैरान हूं...**
लगाया भोग कुछ तुमको, यह एक अपमान करना है।
खिलाता है जो सब जग को उसे कैसे खिलाऊँ मैं।। **अजब हैरान हूं..**
तुम्हारी ज्योति से रोशन, हैं सूरज-चांद और तारे।
महा अन्धेर है तुमको अगर दीपक दिखाऊँ मैं।। **अजब हैरान हूं...**
भुजायें हैं न सीना है, न गर्दन है, न पेशानी।
तुम हो निर्लेप नारायण कहां चन्दन चढ़ाऊँ मैं। **अजब हैरान हूं...**

९. है जिसने सारे विश्व को

है जिसने सारे विश्व को धारण किया हुआ।
वह है हर एक वस्तु के अन्दर रमा हुआ।।
मिलता नहीं है इसीलिए अज्ञानियों को वह।
अज्ञान का है शुद्धि पै परदा पड़ा हुआ।।
दुनियां के दुखःरूप समुद्र से हैं, वो पार।
जगदीश से है प्रेम अति जिनका लगा हुआ।।
सच्ची खुशी से रहते हैं वे जन सदा अलग।
मन जिनका विषय-भोग में होवे फंसा हुआ।।
मन तो मलीन वैसे ही मूर्ख रहा तेरा।
गंगा में रोज जा के नहाया तो क्या हुआ।।
खोते हैं खेल कूद में जो उम्र रोयेगा।
अफ़सोस उनकी बुद्धि को न जाने क्या हुआ।।
अज्ञानियों से रहता है **केवल** वह दूर-दूर।
खुल जायें ज्ञान-चक्षु तो वह है मिला हुआ।।

१०. हे दयामय आप का

हे दयामय आपका, हमको सदा आधार हो।
आपके भक्तों से ही, भरपूर यह परिवार हो।।
छोड़ देवें काम को और क्रोध को मद-मोह को।
शुद्ध और निर्मल हमारा सर्वदा आचार हो।।
प्रेम से मिल-जुल के सारे गीत गावें आपके।
दिल में बहता आपका ही प्रेम पारावार हो।।
जय पिता जय-जय पिता, हम जय तुम्हारी गा रहे।
रात-दिन घर में हमारे आपकी जयकार हो।।
धन्य-धान्य घर में है सभी कुछ आप ही का है दिया।
जिसके लिये प्रभु आपका धन्यवाद बारम्बार हो।।

पास अपने हो न धन तो उसकी कुछ चिन्ता नहीं।
आपकी भक्ति से ही धनवान यह परिवार हो।।

११. हे प्रेममय प्रभो !

हे प्रेममय प्रभो ! तुम्हीं सबके आधार हो।
तुमको परम पिता प्रणाम बार-बार हो।।
ऐसी कृपा करो कि हम सब धर्मवीर हों।
वैदिक पवित्र धर्म का जग में प्रचार हो।।
सन्देश देश-देश में वेदों का दें सुना।
समभाव और प्रेम का सबमें प्रचार हो।।
असहाय के सहाय हों, उपकार हम करें।
अभिमान से बचें, हृदय निर्भय उदार हो।।
फूले, फले संसार में यह रम्य वाटिका।
कर्त्तव्य का अपने सदा हमको विचार हो।।
स्वाधीनता के मन्त्र का जप हम सदा करें।
सेवा में मातृभूमि की तन-मन निसार हो।।

१२. आनन्द रूप भगवन्

आनन्द रूप भगवन् ! किस भांति तुमको पाऊँ,
तेरे समीप स्वामिन् ! मैं किस तरह से आऊँ ?
सुख मूल मुक्ति-रूपम्, मङ्गल कुशलस्वरूपम्,
घड़ियाल शङ्ख को क्या, सम्मुख तेरे बजाऊँ ?
अनुपम परम छबीले, बिन रंग रस रसीले,
कण्टक सखा है फुलवा, क्या सिर तेरे चढ़ाऊँ ?
श्री लक्ष्मी है तेरी निश-दिन चरण की चेरी,
तांबे का एक पैसा, क्या नाथ पर चढ़ाऊँ ?
गङ्गा है तेरी दासी, सेवक है इन्द्र तेरा,

तेरे शरीर पर क्या दो चुल्लु जल चढ़ाऊँ ?

छोटे से दास तेरे रवि-चन्द्र हैं उपस्थित,
करते हैं नित उजाला, घृत-दीप क्या जलाऊँ ?
कोटानुकोटि भूमि, जिस पर असंख्य प्राणी,
जगदीश अपना नम्बर, मैं कौन सा गिनाऊँ ?
विनती **किशोर** की है निशि-दिन यही दयामय !
हृदय में लौ हो तेरी, आँखों में मैं समाऊँ ?

१३. सुखी बसे संसार सब

सुखी बसे संसार सब, दुखिया रहे न कोय,
यह अभिलाषा हम सब की, भगवन् ! पूरी होय।
विद्या-बुद्धि, तेज-बल सबके भीतर होय,
दूध-पूत, धन-धान्य से वंचित रहे न कोय।
आपकी भक्ति प्रेम से, मन होवे भरपूर,
राग-द्वेष से चित्त मेरा, कोसों भागे दूर।
मिले भरोसा नाम का, हमें सदा जगदीश,
आशा तेरे धाम की, बनी रहे मम ईश।
पाप से हमें बचाइये, दया करके दयाल,
अपना भक्त बनाये के, सबको करो निहाल।
दिल में दया उदारता, मन में प्रेम अपार,
हृदय में धीरज वीरता, सबको दो करतार।
हाथ जोड़ विनती करूं, सुनिये कृपा निधान,
साधु संगत सुख दीजिये, दया नम्रता दान।

१४. मुझे वेद धर्म से ए पिता

टेक—मुझे वेद धर्म से ऐ पिता ! सदा इस तरह का प्यार दे।
कि न मोड़ू मुंह कभी इससे कभी चाहे सिर भी कोई उतार दे।।
वह कलेजा राम को जो दिया, वह जिगर जो बुद्ध को अता किया।

वह महान दिल दयानन्द का घड़ी भर मुझे भी उधार दे।।

न हो दुश्मनों से मुझे गिला, करूं मैं बदी की जगह भला।
मेरे दिल से निकले सदा दुआ, चाहे कोई कष्ट हजार दे।।
नहीं मुझको ख्वाहिशे मर्त्तबा, न है मालो जर की हवस मुझे।
मेरी उम्र खिदमते खल्क में, मेरे ईश्वर तू गुजार दे।।
मुझे प्राणी मात्र के वास्ते, करो सोजे दिल वह अता पिता।
जलूँ उनके गम में मैं इस तरह, कि खाक तक भी गुबार दे।।
मेरी ऐसी जिन्दगी हो बसर, कि हूं सुर्खरू तेरे सामने।
न कहीं मुझे मेरी आत्मा ही यह शर्मो ले लो निहार दे।।
न किसी का मर्त्तबा देखकर, जले दिल में करे हसद कभी।
जहां पर रहूं, रहूं मस्त मैं, मुझे ऐसा सब्रो करार दे।।
लगे जख्म दिल पै अगर किसी के तो मेरे दिल में तड़प उठे।
मुझे ऐसा दे दिल दर्द रस, मुझे ऐसा सीना फिगार दे।।

१५. वैदिक नाद बजाओ

वैदिक नाद बजाओ ऐ आर्य वीरगण आओ।
समय नहीं अब सोने का प्यारो, करवट लो अब आंख उघारो।
बिगड़ी बात बनाओ, ऐ आर्य वीर गण आओ।। **वैदिक नाद...**
प्रबल शत्रुओं ने है ठाना, प्रपंच से हमें मिटाना।
सावधान हो जाओ, ऐ आर्य वीर गण आओ।। **वैदिक नाद....**
देश काल की ओर निहारो, करो संगठन वैर बिसारो।
भ्रातृ भाव दर्शाओ, ऐ आर्य वीर गण आओ।। **वैदिक नाद....**
हुए करोड़ों अपने भाई, गौ-भक्षक मुस्लिम ईसाई।
फिर से आर्य बनाओ, ऐ आर्य वीर गण आओ।। **वैदिक नाद....**
गुरु गोविन्द, वैरागी सम, श्रद्धानन्द आत्म त्यागी सम।
धर्मवीर पद पाओ, ऐ आर्य वीर गण आओ।। **वैदिक नाद....**
प्रकाश निज कर्त्तव्य कर्म पर सत्य सनातन वेद धर्म पर।

निर्भय शीश कटाओ, ऐ आर्य वीर गण आओ।। **वैदिक नाद....**

१६. जयति ओ३म् ध्वज

जयति ओ३म् ध्वज व्योम विहारी, विश्व-प्रेम प्रतिमा अति प्यारी।
सत्य सुधा बरसाने वाला, स्नेह-लता सरसाने वाला,
सौम्य-सुमन विकसाने वाला, विश्व निमोहक भव भय हारी।
इसके नीचे बढ़ें अभय मन, सत्यपथ पर सब धर्म धुरी जन,
वैदिक रवि का हो शुभ उदयन, आलोकित होवें दिशि सारी।
इससे सारे क्लेश शमन हों, दुर्मति दानव द्वेष दमन हों,
अति उज्ज्वल अति पावन मन हों, प्रेम तरंग बहे सुखकारी।
इसी ध्वजा के नीचे आकर, ऊंच नीच का भेद भुला कर,
मिले विश्व मुद मंगल गा कर, पन्थाई पाखण्ड बिसारी।
इसी ध्वजा को लेकर कर में, भर दें वेद ज्ञान घर-घर में,
सुभग शान्ति फैले जग भर में, मिटे अविद्या की अंधियारी।
विश्व प्रेम का पाठ पढ़ावें, सत्य अहिंसा को अपनावें,
जग में जीवन-ज्योति जगावें, त्याग पूर्ण हो वृत्ति हमारी।
आर्य जाति का सुयश अक्षय हो, आर्य ध्वजा की अविचल जय हो,
आर्य जनों का ध्रुव निश्चय हो, आर्य बनावे वसुधा सारी।
जयति ओ३म्-ध्वज व्योम विहारी ! विश्व-प्रेम प्रतिमा अति प्यारी।

१७. वैदिक आरती

ओ३म् जय जगदीश पिता प्रभु, जय जगदीश पिता।
विश्व विरंच विधाता, जगत्राता सविता।। **ओ३म्...**
अनन्त अनादि अजन्मा, अविचल अविनाशी।
सत्य सनातन स्वामी, शंकर सुख राशी।। **ओ३म्...**
सेवक जन सुखदायक, जननायक तुम हो।
शुभ सुख शान्ति सुमंगल, वरदायक तुम हो।। **ओ३म्...**
मैं सेवक शरणागत, तुम मेरे स्वामी।

हृदय पटल में प्रगटो, प्रभु मेरे अन्तर्यामी।। **ओ३म्...**

काम, क्रोध, मद, मोह, कपट, छल, व्यापे नहीं मन में।
लगन लगे मम मन की, गुण तेरे वर्णन की।। **ओ३म्...**
नित्य निरञ्जन निशिदिन तेरा ही जाप करें।
तब प्रताप से स्वामी, तीनों ही ताप हरें।। **ओ३म्...**
पतित उद्धारण तारण, शरणागत तेरी।
भूले न भटके भ्रम में, निर्मल मति मेरी।। **ओ३म्....**
शुद्ध बुद्धि के मन में, तेरा ही वर्णन करें।
सब विधि छल-दल तज के तेरी शरण पड़ें।। **ओ३म्...**

१८. आरती

ओ३म् जय जगदीश हरे, पिता जय जगदीश हरे।
भक्त जनन के संकट क्षण में दूर करें। **ओ३म् जय...**
जो ध्यावे फल पावे, दुख विनशे मन का।।
सुख-सम्पत्ति घर आवे, कष्ट मिटे तन का। **ओ३म् जय...**
मात-पिता तुम मेरे, शरण गहूं मैं किस की।
तुम बिन और न दूजा, आस करूं मैं जिसकी। **ओ३म् जय...**
तुम पूरण परमात्मा, तुम अन्तर्यामी।
पारब्रह्म परमेश्वर, तुम सबके स्वामी। **ओ३म् जय...**
तुम करूणा के सागर, तुम पालन कर्त्ता।
दीनदयालु, कृपालु कृपा करो भर्त्ता। **ओ३म् जय...**
तुम हो एक अगोचर, सब के प्राणपति।
किस विधि मिलूं दयामय मुझको दो सुमति। **ओ३म् जय...**
दीनबन्धु दुख हर्त्ता, तुम रक्षक मेरे।
करुणा हस्त बढ़ाओ, शरण पड़ा हूं तेरे। **ओ३म् जय...**
विषय-विकार मिटाओ पाप हरो देवा।

श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ, सन्तन की सेवा। **ओ३म् जय...**

१९. यज्ञ-महिमा

होता है सारे विश्व का कल्याण यज्ञ से।
जल्दी प्रसन्न होते हैं भगवान् यज्ञ से।।
ऋषियों ने ऊंचा माना है स्थान यज्ञ का।
करते हैं दुनिया वाले सब सम्मान यज्ञ का।।
दर्जा है तीन लोक में महान् यज्ञ का।
जाता है देव लोक में इन्सान यज्ञ से।। **होता है....**
करना हो यज्ञ प्रकट हो जाते हैं अग्निदेव।
डालो विहित पदार्थ शुद्ध खाते हैं अग्नि देव।।
सबको प्रसाद यज्ञ का पहुंचाते हैं अग्नि देव।
बादल बना के भूमि पर, बरसाते हैं अग्नि देव।
बदले में अनेक, दे जाते हैं अग्नि देव।
पैदा अनाज करते हैं—भगवान् यज्ञ से।
होता है सार्थक वेद का विकास यज्ञ से।। **होता है....**
शक्ति और तेज यश भरा इस यज्ञ नाम से।
साक्षी यही है विश्व के हर नेक काम में।
पूजा है इसको श्रीकृष्ण-भगवान् राम ने।
होता है कन्या दान भी इसी के सामने।
मिलता है राज्य, कीर्ति, सन्तान यज्ञ से।। **होता है....**
सुख शान्तिदायक मानते हैं दयानन्द इसे।
वशिष्ठ, विश्वामित्र और नारद इसे।।
इसका पुजारी कोई भी पराजित नहीं होता।
भय यज्ञ कर्त्ता को कभी किञ्चित् नहीं होता।
होती हैं सारी मुश्किलें आसान यज्ञ से।। **होता है....**
चाहे अमीर है कोई चाहे गरीब है।
जो नित्य यज्ञ करता है वह खुश-नसीब है।
हम सब में आये यज्ञ के अर्थों की भावना।
हम सबके सच्चे दिल से है यह श्रेष्ठ कामना।
होती है पूर्ण कामना—महान् यज्ञ से।। **होता है....**

२०. सदा फूलता फलता भगवान्

सदा फूलता फलता भगवान, यह याज्ञिक परिवार रहे।
रहे प्यार जो किसी से इनका, सदा आप से प्यार रहे।
मिथ्या कर अभिमान कभी न, जीवन का अपमान करें।
देव-जनों की सेवा करके वेदामृत का पान करें।
प्रभु आपकी आज्ञा पालन, करता, हर नर-नार रहे।। **सदा....**
मिले सम्पदा जो भी इनको, उसको मानें आपकी,
घड़ी न आने पावे इनपै, कोई भी सन्ताप की,
यही कामना प्रभु आप से, कर हम बारम्बार रहे।। **सदा....**
दुनियादारी रहे चमकती, धर्म निभाने वाले हों,
सेवा के ढांचे में सब ने जीवन अपने ढाले हों,
बच्चा-बच्चा परिवार का, बनकर श्रवणकुमार रहे।। **सदा....**
बने रहे सन्तोषी सारे, जीवन के हर काल में,
हाल-चाल ही ऐसा इनका रहें मस्त हर हाल में,
ताकि देश बसाया इनका व सुखदायी संसार रहे।। **सदा....**

२१. जिस नर में आत्मशक्ति है

जिस नर में आत्म-शक्ति है वह शीश झुकाना क्या जाने ?
जिस दिल में ईश्वर भक्ति है, वह पाप कमाना क्या जाने ?
मां-बाप की सेवा करते हैं, उनके दुःखों को हरते हैं ?
वह मथुरा, काशी, हरिद्वार, वृन्दावन जाना क्या जाने ?
दो काल करें संध्या व हवन, नित सत्संग में जो जाते हैं।
भगवान का है विश्वास जिन्हें, दुख में घबराना क्या जाने ?
जो खेला है तलवारों से, और अग्नि से अंगारों से।
रण भूमि में जाके पीछे, वह कदम उठाना क्या जाने ?
हो कर्मवीर और धर्मवीर वेदों में पढ़ने वाला हो।
वह निर्बल-दुखिया बच्चों पर तलवार चलाना क्या जाने ?
मन मन्दिर में भगवान बसा, जो उसकी पूजा करता है।
मन्दिर के देवता पर जाकर वह फूल चढ़ाना क्या जाने ?
जिसका अच्छा आचार नहीं और धर्म से जिसको प्यार नहीं।

जिसका सच्चा व्यवहार नहीं नन्दलाल का गाना क्या जाने ?

ओ३म्

संगठन सूक्त (ऋग्वेद का अन्तिम सूक्त)

ओ३म् सं समिद्युवसे वृषन्नग्ने विश्वान्यर्य आ।
इळस्पदे समिध्यसे स नो वसून्या भर।।

हे प्रभो तुम शक्तिशाली हो बनाते सृष्टि को।
वेद सब गाते तुम्हें कीजिये धन वृष्टि को।।

ओ३म् सं गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।
देवा भागं यथापूर्वे सं जनाना उपासते।।

प्रेम से मिलकर चलो बोलो सभी ज्ञानी बनो।
पूर्वजों की भांति तुम कर्त्तव्य के मानी बनो।।

ओ३म् समानो मन्त्रः समितिः समानी समानं मनः सह चित्तमेषाम्। समानं मन्त्रमभिमन्त्रये वः समानेन वो हविषा जुहोमि।।

हों विचार समान सबके चित्त मन सब एक हों।
ज्ञान देता हूं बराबर भोग्य पा सब नेक हों।।

ओ३म् समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः।
समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति।।

हों सभी के दिल तथा संकल्प अविरोधी सदा।
मन भरे हों प्रेम से जिससे बढ़े सुख सम्पदा।।

●

आर्य समाज के नियम

१. सब सत्य विद्यां और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सब का आदिमूल परमेश्वर है।

२. ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्त्ता है, उसी की उपासना करनी योग्य है।

३. वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।

४. सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।

५. सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार कर करने चाहिये।

६. संसार का उपकार करना उस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।

७. सबसे प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य बर्तना चाहिये।

८. अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिये।

९. प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से सन्तुष्ट न रहना चाहिये, किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिये।

१०. सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहिकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिये और प्रत्येक हितकारी नियम पालने में सब स्वतन्त्र हैं।

शान्ति पाठ

ओ३म् द्यौः शान्तिरन्तरिक्षꣳ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः। शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वꣳशान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि। ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः।।
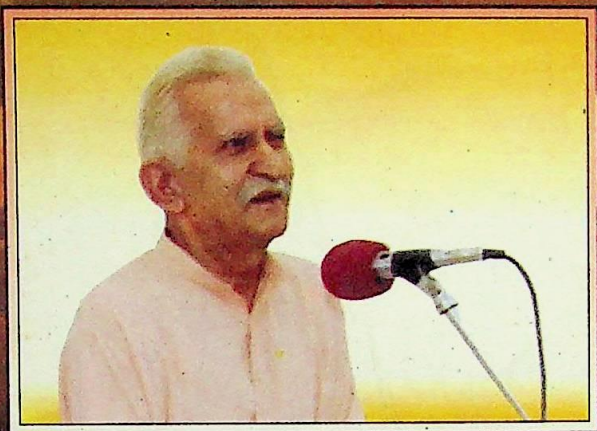
आचार्य श्री पं. हरिदेव आर्य, विद्यावाचस्पति, एम.ए.

आप धार्मिक एवं सामाजिक गतिविधियों में सम्मिलित होने वाले अग्रणी कार्यकर्ता हैं। वैदिक धर्म के कर्मठ प्रचारक हैं। महर्षि द्वारा प्रतिपादित सभी मन्तव्यों को दृढ़ता से तथा हृदय से स्वीकारते हैं, और पालन करते हैं।

आप यज्ञप्रेमी और स्वाध्यायशील व्यक्ति हैं। तभी आपने अनेक पुस्तकों का सम्पादन, संकलन तथा भाष्य करके आर्यजगत् में हलचल मचा दी है जिनमें प्रमुख साहित्य इस प्रकार है-

जगमगाते हीरे, वैदिक नित्य कर्म विधि, मधुर भजन, पुष्पांजली (दो भागों में) वेदांजलि, वैदिक मनुस्मृति, प्रभातगीत, स्वामी श्रद्धानन्द जीवनी, ईशवन्दन, राष्ट्रपितामह महर्षि दयानन्द, सदाचार की ओर वैदिक सत्संग पद्धति तथा योगेश्वर श्रीकृष्ण आदि।

मधुर शास्त्री